



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र



• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 25 • 27 मार्च - 2 अप्रैल, 2023

प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 25-03-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

अर्हत उवाच

अप्पणो गिद्धिमुदाहरे।

मनुष्य अपनी गृद्धि को छोड़े।

आरियं उवसंपज्जे,
सत्त्वधम्ममकोदियं।

मनुष्य सब धर्मों में निर्मल
आर्यधर्म को स्वीकार करे।
जहाँ कुम्भे सअंगाई, सए
सदेहे समाहरे।

आगम पारायण से तत्त्व बोध की प्राप्ति संभव : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग-अहमदाबाद,
१८ मार्च, २०२३

महावीर वाणी को युगीन बनाने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित ग्रंथ 'भगवई-विआहपण्णति' भाग छः लोकार्पित हुआ। बहुश्रुत धर ने इस प्रसंग पर पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र दसवेंआलियं में बताया गया है—श्रमण धर्म के द्वारा इहलोक हित, परलोक हित और सुगति की प्राप्ति होती है। उस श्रमण धर्म के संदर्भ में ज्ञान होना अपेक्षित है। ज्ञान प्राप्त करने का एक उपाय है—बहुश्रुत की पर्युपासना करो। बहुश्रुत के पास बैठो और प्रश्न करो। अर्थ का निश्चय करो।

हमारे आम वाङ्मय में जो श्रुत है, उसका अच्छे तरीके से पारायण होता है, पारायण करने वाले के पास अपनी प्रज्ञा-प्रतिभा होती है और कोई पारायण कराने वाला भी मिल जाए तो आशा की जा सकती है कि कोई बहुश्रुत बन जाए।

मोक्ष मार्ग चतुर्आयामी है—ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। इनमें ज्ञान का पहला स्थान है। ज्ञान एक पवित्र तत्त्व है। आगम पारायण से तत्त्व बोध की प्राप्ति हो सकती है। आज 'भगवई विआहपण्णति' का खंड ६ लोकार्पित हुआ है। हमारे यहाँ ३२ आगम सम्मत हैं, उनमें भगवई एक है। मूल पाठ को पढ़कर अर्थ ग्रहण कर सकें तो बहुत ऊँची बात है। पर उस भाषा का ज्ञान होना चाहिए। अनुवाद का भी अपना महत्त्व है।

आगम संपादन की नींव रखने वाले हमारे चतुर्थाचार्य—श्रीमद् जयाचार्य थे। उन्होंने भगवती सूत्र जैसे विशाल ग्रंथ का राजस्थानी भाषा में पद्यात्मक संपादन



किया था। आचार्य भिक्षु ने भी अपने ग्रंथों में आगम स्वाध्याय का निचोड़ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। ऐसा संभवतः प्रतीत होता है।

वर्तमान संपादन का कार्य आचार्य तुलसी के वाचना प्रमुखत्व में हुआ था जो वर्तमान में भी चल रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ जी का अपना वैशिष्ट्य था। ३२ आगमों का मूल पाठ तो बहुत वर्षों पहले प्रकाशित होकर सामने आ चुका है। फिर ये संस्कृत, छाया, अनुवाद, टिप्पण, भाष्य इस रूप में जो कार्य है, वो कई आगमों का संपन्न हो चुका है। अभी भी कुछ कार्य अवशेष की सूची में हैं।

भगवती की छोटी बहन पन्नवणा है, उसमें भी तत्त्व ज्ञान बहुत है। भगवती आगम

के अनुवादन करने वाले में भी अर्हता होनी चाहिए। यह भी एक प्रज्ञा-सरस्वती की साधना है। ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम अच्छा न हो तो आगम-संपादन का कार्य मुश्किल है। जैन विश्व भारती ऐसे ज्ञान के ग्रंथों को द्रव्य रूप में सामने लाने का कार्य कर रही है। यह कार्य भी एक तपस्या, साधना है।

इसका सभी स्वाध्याय करने का प्रयास करें तो बहुत ज्ञान प्राप्त हो सकता है। अब जो थोड़ा अवशेष की स्थिति में कार्य है, वो भी शीघ्र पूरा हो जाए। हमारा प्रयास भी हो। विद्वत एवं वैज्ञानिक लोगों का भी इस पर भाषण हो तो अच्छी जानकारी प्राप्त हो सकती है। अनेक दृष्टिकोणों से आगमों पर चर्चा हो तो नए

तथ्य सामने प्रस्तुत किए जा सकते हैं। आगम और विज्ञान दोनों साथ-साथ मिल जाएँ तो नई जानकारी प्राप्त हो सकती है। इस कार्य में जिन्होंने भी निरवद्य योगदान दिया है, वो अनुमोदनीय है। आगम कार्य और आगे बढ़े, ऐसी मंगलकामना है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने तेरापंथ को ऊँचाइयों तक पहुँचाया था। आगम संपादन का उत्कृष्ट कार्य शुरू किया था। सर्वप्रथम दसवेंआलियं आगम का संपादन हुआ था। जब वह आगम विद्वत लोगों के हाथ में गया तो उन्होंने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। भगवती सूत्र ज्ञान का महा भंडार है। वर्तमान में पन्नवणा ग्रंथ के संपादन का कार्य साध्वी समाज द्वारा

चल रहा है। तेरापंथ की आचार्य परंपरा के कारण तेरापंथ धर्मसंघ का विकास हो रहा है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि मनुष्य अनेक मशीनों का निर्माण कर सकता है, पर मशीन मनुष्य का निर्माण नहीं कर सकती। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें मानव जीवन प्राप्त हुआ है, जिसे मूल्यवान बनाने वाला एक अंग है—शरीर। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने तीन शरीर बताए हैं—सूक्ष्म शरीर, यशः शरीर और धर्म शरीर। धर्म शरीर से मनुष्य सुखी जीवन जी सकता है।

भगवई खंड-६ के संपादन कार्य में लगे मुनि योगेश कुमार जी ने बताया कि भगवान महावीर ने अध्यात्म विद्या के साथ-साथ वैज्ञानिक विद्या की नींव रखी थी। भगवान महावीर की वाणी में वे तथ्य हैं, जिन्हें हम समझ सकते हैं। उनके तथ्यों में परा मनोविज्ञान है, परमाणु की गति है और गति विज्ञान है। कृष्णा राजि, ज्योतिष विज्ञान, शरीर विज्ञान, जीव विज्ञान आदि अनेक विषयों में जानकारी है। वनस्पति आदि अनेक विषयों पर गहन रहस्य प्रकट किए हैं।

पद्मश्री कुमारपाल देसाई ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी एक प्रकाशवान सूर्य थे। स्वप्नदृष्टा और कांतदृष्टा थे। वे अपने स्वप्न महाप्रज्ञ जी को बताते थे। उन्होंने सन् १९५५ में आगम संपादन का कार्य शुरू किया था। तेरापंथ में आगमों का संपादन तटस्थता से हो रहा है। जैविभा भी धन्यवाद की पात्र है, जो इतना दुरुह कार्य कर रही है। तेरापंथ धर्मसंघ का सौभाग्य है कि उन्हें ऐसी एक आचार्य परंपरा मिली है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)



स्वस्थ समाज का मुख्य आयाम है प्रामाणिकता : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग, अहमदाबाद, १७ मार्च, २०२३

धर्मोपदेशक, धर्मज्ञाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन वाङ्मय में अठारह पाप की प्रवृत्तियाँ बताई गई हैं। ये अठारह प्रवृत्तियाँ पाप का बंध कराने वाली हैं। पाप की प्रवृत्तियों से आदमी बचने का प्रयास करे, यह एक धार्मिकता का कार्य-लक्षण है।

आदमी को निडर रहना चाहिए। भयभीतता एक दुर्बलता है। न तो खुद को डरना चाहिए न दूसरों को डराना चाहिए। डरना कमजोरी है, तो डराना भी एक कष्टदान है। कहीं-कहीं सात्त्विक भय या प्रशस्त भय भी उपयोगी हो सकता है। गुरु से डरना सात्त्विक भय है। वो आदमी को गलत काम करने से बचा सकता है।

पापभीरुता यानी पाप से डरना भी अच्छी बात है। अपनी आत्मा को पाप से बचाने का प्रयास करें। अदत्तादान एक ऐसा पाप है, जिसकी पृष्ठभूमि में लोभ की चेतना प्रभावित है। लोभ या अभावग्रस्तता चोरी का कारण बन सकती है। गृहस्थ चोरी से बचें। ऐसी चेतना की प्रामाणिकता रखनी चाहिए। चोरी नहीं करना और झूठ नहीं बोलना ये दो प्रामाणिकता के आयाम हैं।

(शेष पृष्ठ २ पर)



संयम व चारित्र से आत्मकल्याण संभव : आचार्यश्री महाश्रमण



**शाहीबाग-अहमदाबाद,
१६ मार्च, २०२३**

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी का शाहीबाग प्रवास का प्रथम रविवार। खचाखच भरा हुआ जैन मज्जु जयतु शासन समवसरण। ऐसा लग रहा था मानो पूज्यप्रवर का चातुर्मासिक प्रवास हो रहा हो।

महामनीषी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी आत्मा अनंत-अनंत काल से संसार में भ्रमण कर रही है। इसका कोई आदि बिंदु नहीं है। अनादि काल से आत्मा जन्म-मरण कर रही है। जैसे आकाश का कोई ओर-छोर नहीं है, वैसे ही आत्मा का कोई प्रारंभ बिंदु नहीं होता है। पर आगे हमेशा ही भ्रमण करती रहेगी,

यह बात सर्वत्र लागू नहीं होती।

अभय जीवों के तो जन्म-मरण का न कोई आदि बिंदु है, न कोई अंत बिंदु है। हमेशा ही उनकी आत्मा भ्रमण करेगी। किंतु जो मोक्षगामी भव्य जीव हैं, उनके जन्म-मरण की परंपरा का समापन बिंदु आ जाता है।

इस अनादिकालीन यात्रा में दो चीजें बहुत महत्वपूर्ण हैं—सम्यक्त्व और चारित्र। ये दो महान रत्न हैं। चारित्र की भी आधारभूमि सम्यक्त्व है। सम्यक्त्व के बिना चारित्र नहीं हो सकता। चारित्र के बिना सम्यक्त्व तो हो सकता है।

मैं कौन हूँ? मैं जीव हूँ। शरीर पुद्गल है। शरीर और आत्मा का संयोग जीवन है। जैसे मिट्टी और सोना मिले हुए हैं, पर दोनों

का अस्तित्व अलग-अलग है। मैं शरीर नहीं हूँ, आत्मा हूँ। पर कर्मों के बंध के कारण से शरीर साथ रह रहा है। बंध दो रूपों में होता है—पुण्य और पाप। जो आश्रव के द्वारा कर्मों का बंध होता है। आश्रव को रोकने वाला संवर है। संवर से नए कर्म तो नहीं बंधेंगे, पर पहले से बंधे कर्मों को काटने का उपाय है—निर्जरा-तपस्या। अनेक रूपों में तपस्या करके कर्मों को तोड़ा जा सकता है, हल्का किया जा सकता है।

कर्मों के कटने पर आत्मा शरीर से अलग हो जाएगी, मोक्ष को प्राप्त हो जाएगी। यह सम्यक्त्व और तत्त्व बोध है। यथार्थ को जान लेना, उस पर यथार्थ श्रद्धा करना सम्यक्त्व है। सारे ज्ञान और तत्त्व बोध के अधिकृत प्रवक्ता तीर्थंकर होते हैं। अर्हत् हमारे देव हैं। पर वर्तमान में तीर्थंकर तो भरत क्षेत्र में नहीं हैं।

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्य होते हैं। अर्हत्-केवल ज्ञानी ने जो कहा है, वो सत्य है, यथार्थ है। उस यथार्थ के प्रति हमारी श्रद्धा हो। कषाय मंद पड़ें। साथ में तत्त्व बोध का प्रयास हो। ये तीन आयाम हमारे सम्यक्त्व को पुष्ट रखने वाले संपोषण देने वाले सिद्ध हो सकते हैं। सम्यक्त्व के साथ चारित्र की दिशा में भी आगे बढ़ें तो हम मोक्ष की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं।

हर कोई संयमी तो नहीं बन सकता

है, पर गृहस्थ श्रावक बन सकते हैं। सुमंगल साधना ग्रहण की जा सकती है। जितना त्याग होता है, उतना अच्छा है, आत्मा निर्मलत्व को प्राप्त हो सकती है। अणुव्रत को तो जैन-जैनेतर कोई भी स्वीकार कर सकते हैं। दिन-रात में एक सामायिक हो जाए। शनिवार की सामायिक तो अवश्य हो। पुनिया श्रावक जैसी सामायिक हो।

अहमदाबाद जैसा बड़ा नगर, यहाँ लोगों में धार्मिकता भी है। श्रद्धा-भक्ति व साधु-साध्वियों की सेवा की भावना होना बड़ी बात है। ज्ञानशालाएँ भी अच्छी चलती हैं। युवकों-किशोरों में अच्छे संस्कार-धार्मिकता रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि व्यक्ति मुक्ति पाने के लिए स्वयं का ज्ञान करे। तुम अपने दीपक स्वयं बनो, तुम्हें अपना मार्ग मिलेगा। आत्मा के द्वारा आत्मा को देखें, तो मंजिल प्राप्त हो सकती है। हम अंतर्मुखी बनें। दूसरों के दोषों को देखें-सुनें नहीं, अंधे और बधिर बन जाएँ। स्वात्मदर्शी सुखी होता है। नजर बदली तो नजरिया बदल सकता है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि हमारा जीवन कुश के अग्रभाग पर टिकी

ओस के समान अशाश्वत है; क्षणभंगुर है। मृत्यु असंभावी घटना है। जन्म और मृत्यु के बीच का समय जीवन है। हम ऐसा जीवन जीएँ कि इस मनुष्य जन्म का सार निकाल सकें।

मुनि गौरव कुमार जी, जिनकी शिक्षा व कर्म भूमि अहमदाबाद रही है, उन्होंने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। साध्वी तरुणप्रभा जी एवं साध्वी हिमप्रभा जी आदि साध्वियों ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने पूज्यप्रवर के साहित्य पर सुंदर प्रस्तुति दी। किशोर मंडल व स्थानीय जैन संस्कारकों ने गीत से अपनी भावना अभिव्यक्त की। अणुव्रत समिति के मंत्री सुरेश बागरेचा एवं कापीरेटर प्रतिभा बेन ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। स्थानीय सभा द्वारा प्रकाशित तेरापंथ समाचार का विशेषांक पूज्यप्रवर को उपहृत किया। वनिता-सुरेंद्र बाफना ने महासर्वोत्तरभद्र तप के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

स्वस्थ समाज का मुख्य आयाम है...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गृहस्थ का पैसे के साथ संबंध होता है। साधु के पास कोड़ी है, तो साधु कोड़ी का नहीं। गृहस्थ के पास कोड़ी नहीं तो वह कोड़ी का नहीं। काम और अर्थ गृहस्थरूपी रथ के दो पहिए हैं, लेकिन उन पर धर्म और मोक्ष का नियंत्रण रहे। यह गृहस्थी का रथ उत्पन्न पर न चला जाए। गृहस्थ प्रामाणिकता और इंद्रिय-संयम रखें। व्यवहार-जगत में भी एक सीमा तक इंद्रिय संयम उपयोगी होता है।

अणुव्रत में भी प्रामाणिकता-नैतिकता की बात बताई गई है। चाहे आदमी किसी भी संप्रदाय के हों, नास्तिक हों या आस्तिक। बच्चों में भी अच्छे संस्कार हों। स्वस्थ समाज का एक आयाम है—प्रामाणिकता।

नव दीक्षित साध्वी राहतप्रभा जी की बड़ी दीक्षा

पूज्यप्रवर ने १० मार्च को मुमुक्षु राहत को कोबा में मुनि दीक्षा प्रदान कराई थी। आज बड़ी दीक्षा छेदोपस्थापनीय चारित्र प्रदान करते हुए परम पावन से पाँच महाव्रतों और छठा रात्रि विरमण व्रत को खोल-खोलकर विस्तार से समझाते हुए नवदीक्षिता साध्वी राहतप्रभा जी को ग्रहण करवाया। बड़ी दीक्षा से पूर्व नवदीक्षिता साध्वीश्री ने अपने सात दिन के अनुभव बताए।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में आज प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन समारोह आयोजित हुआ। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाते हुए शिविरार्थियों को बताया कि शिविर के बाद भी प्रेक्षाध्यान के प्रयोग निरंतर करते रहें एवं दूसरों को भी लाभान्वित करने का प्रयास करें।

मुनि कुलदीप कुमार जी, मुनि मुकुल कुमार जी, साध्वी सरस्वती जी, साध्वी रिद्धिप्रभा जी, साध्वी आटमप्रभा जी, समणी रोहिणीप्रज्ञा जी ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। पूज्यप्रवर ने सभी को आशीर्वचन फरमाया।

अहमदाबाद का श्रावक समाज चारित्रात्माओं की स्वास्थ्य संबंधी सेवा में पूर्णतया जागरूक है। डॉ० धवल एवं स्थानीय सभा के पदाधिकारी जागरूकता से सेवा में तत्पर रहते हैं। पूज्यप्रवर ने सभी को आशीर्वचन फरमाया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान के शिविरार्थी संकल्प करें कि वे दूसरों को प्रेक्षाध्यान सिखाने का प्रयास करेंगे। आत्मा में अनंत ज्ञान, शक्ति और आनंद है, प्रेक्षाध्यान से हम यह अपने भीतर जागृत कर सकते हैं। चेतना केंद्रों पर चेतना की शक्ति होती है। अंतराय कर्म हल्का होने से शक्ति जागृत होती है। ध्यान से हम ज्ञान-शक्ति को जागृत कर सकते हैं। चेतना का रूपांतरण होने से चिंतन-व्यवहार बदल सकता है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि आदमी मनुष्य जन्म का सम्यग् उपयोग करना चाहता है, तो उसे सम्यग् पायलट गुरु चाहिए। सम्यग् राह हमें गुरु दिखा सकते हैं। अध्यात्म गुरु का प्राप्त होना दुर्लभ बात होती है। पूज्यप्रवर हमें भवसागर से पार पहुँचाने वाले होते हैं। परम पावन का जीवन हम सबके लिए आदर्श है।

प्रेक्षाध्यान के शिविरार्थी श्वेता डागा एवं अशोक बरलोटा ने शिविर के अनुभव बताए। स्थानीय सभा के पदाधिकारियों द्वारा ११ संकल्पों के हजारों संकल्प-पत्र पूज्यप्रवर को अर्पित किए गए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

दुःख मुक्ति का मार्ग है

आत्मानुशासन : आचार्यश्री महाश्रमण

सेटेलाइट, अहमदाबाद पश्चिम १४ मार्च, २०२३

प्रेरणा प्रदायक आचार्यश्री महाश्रमण जी अहमदाबाद के पश्चिम क्षेत्र प्रेरणा तीर्थ में पधारे। परम पावन ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के मन में दुःखमुक्त रहने की एक भावना रह सकती है। अनेक शारीरिक-आर्थिक व मानसिक तकलीफ हो जाती है। मन दुखी हो जाता है। भावनात्मक दुःख घृणा, क्रोध आदि हो सकते हैं।

आदमी दुःखमुक्त होना चाहता है, तो उसका उपाय किया जाए, बीमारी का समाधान किया जाए। शास्त्रकार ने दुःखमुक्ति का उपाय बताया है कि आदमी अपने आपका ही अभिनिग्रह करे, अपने आप पर नियंत्रण करे, स्वयं पर स्वयं का अनुशासन करे, तो ऐसा करने से दुःखमुक्त हो सकता है। पर ऐसा करना भी कठिन कार्य है।

दूसरों पर शासन करना कठिन काम हो सकता है। स्वयं पर शासन करने के लिए हमारा शरीर, वाणी और मन पर संयम होना चाहिए। इंद्रियों पर संयम करना चाहिए। मन मंगल रहे। इनसे हम आत्मानुशासन करने में आगे बढ़ सकते हैं। गुरु बनने के लिए अच्छा शिष्य बनना पड़ता है। यह एक प्रसंग से समझाया।

जैन शासन में अनेक संप्रदाय व संस्थाएँ हैं। हम सभी की आध्यात्मिक सेवा करने का प्रयास करें। साधु समाज की साधना अच्छी चले, उनमें पूजनीयता रहे। श्रावक समाज में भी अच्छे संस्कार रहें। बाल पीढ़ी में अच्छे संस्कारों का सिंचन हो। भौतिकता सुविधा दे सकती है पर आध्यात्मिकता शांति प्रदान करती है। संसाधन के साथ साधना भी हो।

भारत जैन महामंडल भी अच्छा कार्य करती रहे। हमारी ज्ञान संपदा सुरक्षित रहे। आज प्रेरणा तीर्थ आए हैं। जैन समाज में चार तीर्थ होते हैं, हम तरने की दिशा में आगे बढ़ें। जैन शासन में धार्मिक-आध्यात्मिक उन्नयन होता रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में पश्चिम सभा से पारसमल कोठारी, व्यवस्था समिति से राजेंद्र बोथरा, भारत जैन महामंडल से सुभाष भाई शाह, संतोष सुराणा, तेरापंथ महिला मंडल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

अभातेममं की अध्यक्षा नीलम सेठिया ने कल से पूज्यप्रवर की सन्निधि जैन धर्मोस्तु मंगलम् शुरु होने की घोषणा की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

भगवान महावीर जयंती पर विशेष

महावीर के सिद्धांतों को आत्मसात करने से शांति और आनंद का वातावरण बन सकता है

● मुनि कमल कुमार ●

भगवान महावीर इस अवसर्पिणी काल के २४वें अर्थात् अंतिम तीर्थंकर थे, जिनका जन्म बिहार के क्षत्रिय कुंड ग्राम में पिता सिद्धार्थ, माता त्रिशला के घर हुआ। आपका जन्म नाम वर्धमान था। भगवान महावीर नाम दीक्षा के पश्चात हुआ। ऐसे आपके कई नाम थे। वर्धमान, ज्ञातपुत्र, सन्मति, वीर, अतिवीर, श्रमण महावीर। परंतु आज आप महावीर नाम से जाने जाते हैं। भगवान महावीर ने युवा अवस्था में बेले की तपस्या में दीक्षा ली और जीवन-भर बेले से कम की तपस्या का वर्णन नहीं आता है। उनकी उत्कृष्ट तपस्या ६ मास की थी। भगवान की तपस्या चौविहार थी, उन्होंने तपस्या में जल भी ग्रहण नहीं किया। साधना काल में भगवान को भयंकर कष्टों का सामना करना पड़ा; परंतु उन्होंने सभी कष्टों को समता भाव से सहन कर भव संचित कर्म खपा दिए। उन्हें बेले की तपस्या में ही केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई। जब तक केवल ज्ञान नहीं हुआ तब तक आप पूर्ण मौन ध्यान की साधना में लीन रहें, केवल ज्ञान होने के बाद आपने उपदेश प्रारंभ किया, परंतु उस समय वह उपदेश देवों के मध्य हुआ। देवता सेवा, उपासना कर सकते हैं, परंतु व्रतों को स्वीकार नहीं कर सकते। इसलिए प्रथम देशना में कोई भी व्रती नहीं

बना। दूसरे देशना में व्रती बनने लगे और ४ तीर्थ की स्थापना हो गई। भगवान का उपदेश प्राणी मात्र के कल्याण के लिए होता। उनके प्रवचन में सिंह और बकरी, खरगोश और सियार, चूहे और बिल्लियाँ भी पास-पास बैठकर उपदेश सुनते। भगवान का अतिशय था कि सभी आपसी वैमनस्य को भूलकर एक-दूसरे के सहायक बन जाते। भगवान महावीर ३० वर्ष गृहवासी रहे, साढ़े बारह वर्ष साधना काल में लगे और ३० वर्ष तक पैदल विहरण कर जनकल्याण करते रहे। भगवान के उपदेश से ही सतीप्रथा, दासप्रथा जैसी कुरीतियाँ समाप्त हुईं। भगवान महावीर ने दो प्रकार के धर्म का निरूपण किया—आगार धर्म और अणगार धर्म। अर्थात् गृहस्थ लोगों के लिए अणुव्रत और साधुओं के लिए महाव्रतों का विधान बनाया।

भगवान का मुख्य लक्ष्य था कि व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा अहिंसा, संयम और तप का आचरण करे। हिंसा, असंयम और भोग, भव, भ्रमण को बढ़ाने वाले हैं। इन पर नियंत्रण होने से ही व्यक्ति स्वस्थ, मस्त और विश्वस्त बन सकता है। भगवान का उपदेश आज भी उतना ही आवश्यक है, जितना उस समय था। आज हम देख रहे हैं रोग बढ़ते जा रहे हैं। इसका मुख्य कारण आज असंयम ही है। हमारा संयम ही हमें

समाधि और शांति प्रदान कर सकता है। भगवान के मुख्य सिद्धांत अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह, समन्वय आदि को अपनाया जाए तो आज जो व्यक्ति-व्यक्ति में तनाव, टकराव, अलगाव, दुराव, मनमुटाव बढ़ रहा है और उस पर नियंत्रण हो सकता है।

भगवान ने कहा था कि मिति में सब भूएसु अर्थात् सब प्राणियों के साथ मेरी मैत्री हो। वह धन से नहीं अच्छे मन और चिंतन से ही हो सकती है। धन से ही अगर शांति होती तो जैन धर्म के तीर्थंकर राज परिवार से ही नहीं ३ तीर्थंकर तो चक्रवर्ती थे, चक्रवर्ती की संपदा के सामने आज के धनाढ्य नगण्य से नजर आते हैं। अतीत में भी शांति और समाधि अहिंसा, संयम और तप से प्राप्त होती थी। वर्तमान में भी इन्हीं तत्त्वों से शांति प्राप्त की जा सकती है। महावीर जयंती पर हम भी भगवान महावीर के सिद्धांतों को आत्मसात करने का प्रयास करें, तभी हमारी जयंती मनानी सार्थक होगी। वर्तमान में महावीर के जय नारे लगाने वालों की संख्या बढ़ रही है, आवश्यकता है कि हम महावीर के उपदेशों को अपनाएँ, जिससे परिवार, समाज, देश और विश्व में शांति और आनंद का वातावरण बन सके।

इसी शुभकामना के साथ।

भगवान महावीर एक कालातीत संस्कृति

● समणी स्वर्णप्रज्ञा ●

भारतीय संस्कृति ऋषि और कृषि प्रधान संस्कृति रही है। समय-समय पर विभिन्न ऋषियों, मुनियों, संन्यासियों और पैगंबरों ने अवतार लेकर इस धरा को पुनीत एवं पावन बनाया। उसी परंपरा में जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर का नाम भी तेजस्वी सूर्य की तरह है, जिन्होंने अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करके कण-कण को आलोक से आपूरित किया। वे राजवंशीय भौतिक वातावरण में जन्म लेकर भी उस भोगवादी संस्कृति के अनुगामी नहीं बने। संन्यस्त जीवन की बीहड़ राहों पर चरणन्यास कर एक ऐसा राजपथ बना दिया, जिस पर चलने वाले हर व्यक्ति भगवान् के प्रतिरूप बने।

उनके वर्धमान से महावीर बनने की यात्रा पुरुषार्थ की सफलतम यात्रा है। भौतिकता से अभौतिकता की, लौकिकता से अलौकिकता की तथा विकृति से संस्कृति की दिव्य निशानी है।

जब-जब उनके जीए हुए जीवन पृष्ठों को पढ़ने की कोशिश करते हैं, तब एक स्वाभाविक प्रश्न उभरता है कि भौतिक संपदा से युक्त राजकुल परिवार में जन्म लेकर भी अकिंचन परिव्राजक का जीवन क्यों अंगीकार किया? अपने अग्रज भाई की मनुहारों को क्यों अस्वीकृत कर दिया? उनको अपनी पत्नी और बेटी का मोह क्यों नहीं लुभाया? ऐसे कई प्रश्न जिज्ञासु मन में उभर सकते हैं। मेरी दृष्टि में इनका एक ही समाधान हो सकता है कि जिनके मन में सम, शम और श्रम की लौ प्रज्वलित हो जाती है वे हवा की अनुकूलता को देखे बिना प्रतिघ्नोतगामी बनते हैं।

भगवान महावीर की जीवन-गाथा संयम, साधना, समर्पण, संकल्प, सहिष्णुता की अमिट स्याही से लिखित थी, जो आज भी अमरता का संदेश देती है। उनकी साधकता की वीणा में जहाँ आत्मा के मृदु गीत स्फुरित होते हैं, वहाँ सामाजिकता, पारिवारिकता के वातावरण को स्वस्थ बनाने के बीज भी आज प्रस्फुटित हो रहे हैं।

वे अहिंसा के पुरोधे थे, इसलिए उन्होंने प्रत्येक प्राणी चाहे वह छोटे से छोटा कीट, पतंगा भी क्यों न हो, उनमें भी मनुष्य जैसी आत्मा की संजीवता है। वह भी सुख का इच्छुक और मृत्यु से भी भयभीत रहता है। उन्होंने एक शाश्वत सत्य को उजागर करते हुए कहा कि जैसे मुझे जीने का अधिकार है, वैसे दूसरों को भी है। अतः दूसरों के अधिकारों का हनन करना हिंसा है। अपनी अहिंसा के माध्यम से पर्यावरण सुरक्षा की बात कही। बढ़ते हुए औद्योगिकरण से वन दोहन एवं पानी और वायु का प्रदूषण संपूर्ण विश्व के समक्ष एक समस्या है। इसलिए उन्होंने पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति में जीवों की प्ररूपणा करके उनके बचाव और सुरक्षा को अहमियत प्रदान की। वर्तमानिक युग युद्ध और आतंक के दहशत से काँप रहा है। ऐसी स्थिति में महावीर की अहिंसा, प्रेम, शांति और अभयता की वर्षा करके मानव मन की पीड़ा को दूर कर रही है।

भगवान् महावीर ने अपरिग्रह के जरिए देश, समाज एवं परिवार में पनप रही आर्थिक विषमता को समतल धरातल दिया। वस्तुतः जहाँ एक तरफ धन का अंबार हो तथा एक तरफ भूखमरी हो, वहाँ समरसता कैसे पनप सकती है। आर्थिक विषमता समस्त बुराइयों की जनक है। उपभोग के साधनों पर एकाधिकार होना, बाह्य आडंबरों पर पानी की तरह पैसा बहाना, अनैतिक कार्यों से धन संग्रह करना आदि बिंदु समाज की नींवों को कमजोर करता है। यह सच्चाई है कि पैसे से रोटी खरीद सकते हैं, भूख नहीं, दवाई खरीद सकते हैं, पर मौत नहीं, मकान खरीद सकते हैं, पर भाईचारा नहीं। अतः ऋषियों द्वारा परिभाषित वाणी 'संतोष ही परम सुख' में अपरिग्रह की आत्मा निहित है।

महावीर का अनेकांतवाद, समन्वय का वातावरण सृजित करता है। व्यक्ति की आग्रहवृत्ति, कलह, विद्वेष तथा आवेश को संपुष्ट करती है। परिणामतः वह अपने समक्ष दूसरे को बौना समझता है और दूसरों के सहअस्तित्व को नकार देता है। महावीर का यह संदेश बड़े-छोटे, अणु-महान्, लघु-विशाल, अपने-पराए तथा अस्तित्व-नास्तित्व को एक साथ अपनी भूमिका में प्रतिष्ठित करके एक साथ पनपने का स्थान देता है। महावीर ने कहा—एक दृष्टिकोण से मैं सही हूँ तो दूसरे दृष्टिकोण से तुम भी सही हो। उन्होंने अनेकांत के धागे से टूटते परिवार, राष्ट्र, समाज और रिश्तों को बाँधा।

इसीलिए महावीर का अंतःकरण कालातीत, देशातीत और नामातीत है। अतीत में महावीर के संदेशों की जितनी अपेक्षा थी, आज भी उससे ज्यादा है।

अध्यात्म के महासूर्य भगवान महावीर

● शासनश्री साध्वी पानकुमारी (प्रथम) ●

किसी देश की प्रतिष्ठा नामचीन हस्तियों से नहीं, नामी कंपनियों से, कल-कारखानों से नहीं होती। देश का सुयश होता है, महापुरुषों के चरित्र चिंतन से, ऋषि-मुनियों के अनुभूत सत्यों से सद्भावना, सौहार्द, सामंजस्य साधना जैसे नैतिक मूल्यों के विकास से। हमारा देश महान है। यह ऋषि प्रधान देश है, हमें इसकी अमूल्य अतुल्य विरासत पर गर्व और गौरव है। भारत वसुंधरा का सौभाग्य है जो इस पवित्र धरती को राम और रहीम मिले, बुद्ध और महावीर जैसे महामनस्वी मिले।

भगवान महावीर अध्यात्म के महासूर्य थे। वे जिनशासन के सरताज थे। महाप्रभु महावीर एक मानव बनकर इस भारत भूमंडल में आए। उन्होंने महामानव बनकर जन-जन को लोककल्याण का राजमार्ग दिखाया। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को क्षत्रिय कुंडग्राम में प्रभु का जन्म हुआ। अतः नेरस का दिन मंगलमय बन गया। महावीर के जन्म से विहार भूमि का क्षत्रिय कुंडग्राम

इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया। धन्य है माँ त्रिशला और राजा सिद्धार्थ—जिन्होंने ऐसे नर रत्न को पैदा किया। जो चौबीसवें तीर्थंकर के रूप में जैन धर्म के महानायक कहलाए। तीर्थंकर महावीर ने लोक चेतना में ज्ञान की गंगा दर्शन की दीप्ति और चरित्र की चिन्मय चैतन्य लौ प्रज्वलित की। देवाधिदेव की ज्ञान रश्मि, ध्यान रश्मि, भोग रश्मि और प्रयोग रश्मि अद्भुत और विलक्षण है। सत्य शिव सौंदर्य के प्रतिमान भगवान महावीर का नाम पवित्र पावन मंत्राक्षर तुल्य है। जो शुद्ध भावों से भगवान का सुमिरन करता

है, उसका कल्याण हो जाता है। अहिंसा अनेकांत और अपरिग्रह के तीन सिद्धांत प्रभु ने मानवता को प्रदान किए। आत्मवाद, कर्मवाद, समतावाद महामना के ऐसे सार्वजनिक आयाम हैं। जिन्हें हम जानें, जीने का प्रयास करें तभी कल्याण संभव है। महावीर जयंती का मंगलप्रभात जन-जीवन के लिए सुप्रभात बने।

किस भाषा में कलें आज मैं,
देव तुम्हारा अभिनंदन।
है सर्वस्व समर्पण तेरे,
चरणों में त्रिशला नंदन।।

आगम पारायण से तत्त्व बोध की प्राप्ति...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी इस विश्व के एक आश्चर्य थे

इसरो के वैज्ञानिक नरेंद्र भंडारी ने कहा कि आगमों से हम वो तथ्य जान सकते हैं, जो वैज्ञानिक नहीं जानते। तेरापंथ के आचार्यों ने आगमों का ज्ञान आम जनता तक पहुंचाया है। कितनी मुश्किलों से ये ज्ञान हमें प्राप्त हो रहा है। विज्ञान तो ३००-४०० वर्ष पहले की बात जानता है, पर भगवान महावीर ने तो २६०० वर्ष पहले वो तथ्य जैन समाज को दे दिए थे। अनेक वैज्ञानिक तथ्य छिपे हैं। कैसे परमाणु से ब्रह्मांड की रचना

हुई। इस पुस्तक में कितने सूक्ष्म रूप से समझाया है। प्रश्न यह है कि हम भगवान की वाणी का उपयोग किस तरह कर रहे हैं। आज जैन विद्वानों की कमी है। उसे आगे बढ़ाना जरूरी है।

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद्र लुंकड़ आदि ने यह ग्रंथ श्रीचरणों में लोकार्पित किया। व्यवस्था समिति द्वारा पद्मश्री कुमारपाल भाई देसाई व नरेंद्र भंडारी का साहित्य से सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



महिला मंडल के विविध आयोजन



महिला दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन दिल्ली।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं, दिल्ली द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ भवन, रोहिणी में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र के साथ साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी ने कार्यक्रम का प्रारंभ किया। तत्पश्चात मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। मंडल अध्यक्ष मंजु जैन ने सभी का स्वागत किया।

प्रेरणा सम्मान के तहत एसीपी आरती, डॉ० पूजा जैन, एसआई सरोजिनी का प्रशस्ति-पत्र के साथ सम्मान किया गया एवं उनके अनुभव सुने गए। मंत्री यश बोथरा ने प्रशस्ति-पत्र का वाचन किया।

पूर्व म्यूनिसीपल काउंसलर कनिका जैन का तेममं, दिल्ली द्वारा सम्मान विशेष अतिथि के तौर पर सम्मान किया गया।

दूसरे सत्र में साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी ने कहा कि जब तक एक नारी दूसरी नारी का सम्मान न करे, तब तक किसी भी सफलता का कोई महत्त्व नहीं है। साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहानी के माध्यम से समझाया कि परिवार व समाज के साथ हमारे विचारों का मेल-जोल होगा, तभी हम आगे बढ़ पाएँगे। अभातेममं चीफ ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी ने कहा कि जब तक नारी स्वयं का सम्मान करना नहीं सीखती तब तक अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की कोई सार्थकता नहीं है।

सहमंत्री इंदिरा सुराना के सहयोग से इस कार्य को सुंदर तरीके से अंजाम दिया गया। स्थानीय बहनों द्वारा नारी सशक्तिकरण पर प्रस्तुति दी गई।

क्षेत्रीय संयोजिका कुसुम खटेड़ ने घर

और बिजनेस के बीच सामंजस्य रखकर बिजनेस को आगे बढ़ाने के टिप्स दिए।

कार्यक्रम में सहमंत्री इंदिरा सुराना व प्रचार-प्रसार मंत्री प्रवीणा सिंधी का विशेष श्रम रहा। अभातेममं कार्यसमिति सदस्य कुसुम बैंगानी, पूर्वाध्यक्ष गुलाब बैद, पूर्वाध्यक्ष मनफूल बोथरा, पूर्वाध्यक्ष निर्मला कोठारी, रोहिणी सभा के अध्यक्ष विजय जैन, मंत्री राजेंद्र सिंधी, पश्चिम विहार सभाध्यक्ष सुशील जैन की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में लगभग 9७५ से अधिक बहनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन प्रवीणा सिंधी ने किया।

श्री उत्सव में उमड़ा जनसैलाब

कोयंबदूर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा श्रीउत्सव कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम आचार्यश्री महाश्रमण जी के ऑडियो नमस्कार महामंत्र से शुरू हुआ। मंत्री आरती रांका ने मंगलाचरण किया। महिला मंडल की अध्यक्ष मंजु गिड़िया ने आगंतुकों का स्वागत किया।

अभातेममं की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य एवं मंडल उपाध्यक्ष मोनिका लुणिया ने संचालन व धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर अन्य समाज की बहनों ने विभिन्न चीजों की ५५ स्टॉल लगाए। नवीन सुराणा का भी कार्यक्रम में श्रम रहा।

एक स्टॉल ट्रांसजेंडर के प्रायोजक टाइल स्पोसर गिड़िया परिवार ने दिया और तीन स्टाल के प्रायोजक महिला मंडल रहे जो कि महिला मंडल की बहनों को प्रदान किए गए।

इस अवसर तेरापंथ सभा अध्यक्ष

उत्तमचंद पुगलिया, ट्रस्ट के अध्यक्ष नगराज नाहटा, टीपीएफ के अध्यक्ष अमन बैद, सभा मंत्री अजय बुच्चा, दक्षिण भारत के प्रमुख किशोर जैन, धनराज सेठिया सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

श्रीउत्सव में सहमंत्री ज्योति सुराना और मधु चोरड़िया का इसमें श्रम रहा। क्रोमल फलोदिया ने ऑनलाइन, इंस्टाग्राम में प्रचार-प्रसार का काम किया। सहमंत्री कनकप्रभा बुच्चा, प्रचार-प्रसार मंत्री मोनिका कोटेचा, कन्या मंडल प्रभारी ममता पुगलिया, कन्या मंडल संयोजिका, ख्याति सेमलानी, उप-संयोजिका श्रुति बाफना और मंडल की अन्य सभी बहनों ने अपनी-अपनी जिम्मेदारी निभाई।

जैन धर्म का मूल तत्व अहिंसा

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्वावधान में 'हिंसा वर्सेस अहिंसा' कार्यक्रम शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी, शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी, साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में न्यू तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल की बहनों के द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया।

महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि अहिंसा का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्त्व है। जैन धर्म का मूल तत्व ही अहिंसा है। साध्वी प्रमोदश्री जी ने कहा कि सब जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। हम अपनी थोड़ी-सी सुख-सुविधा एवं

फैशन के लिए हिंसात्मक चीजों से बनने वाली वस्तुओं का प्रयोग करते हैं, किंतु इनके बिना भी हमारा जीवन चल सकता है। जैन स्कॉलर विमल गोलेछा ने अध्यात्मिक दृष्टिकोण से अहिंसा का प्रशिक्षण दिया।

महिला मंडल सदस्य मीना ओस्तवाल ने मोनो एक्टिंग के द्वारा वीगन के बारे में विस्तार से बताया। डॉ० साहब का महिला मंडल के द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर अभातेममं सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा, उपाध्यक्ष चंद्र बालड़, रानी बाफना, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, सहमंत्री इंदु भंसाली, रेखा बालड़, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल एवं अन्य श्रावक गण सहित लगभग ८० भाई-बहन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन संगीता बोथरा ने किया।

अमृतम् सभा मंच का लोकार्पण

लाडनूँ।

जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूँ द्वारा अभातेममं की योजना 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' के अंतर्गत शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर स्थानीय सेठ सूरजमल भूतोड़िया रा०उ०मा०वि० में महिला मंडल, लाडनूँ द्वारा नवनिर्मित अमृतम् सभा मंच का लोकार्पण शासन गौरव कल्पलता जी और हाकमजी साध्वी लक्ष्यप्रभा जी के सान्निध्य में किया गया।

भूतोड़िया स्कूल के बच्चों के द्वारा स्वागत गीतिका और सरस्वती वंदना के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

अमृतम् सभा मंच का उद्घाटन तेममं की अध्यक्ष प्रीति जैन घोषल, श्राविका डॉ० गौरव माणक कोठारी, कमलाबाई कठोटिया, डॉक्टर सुशीला बाफना और महिला मंडल के सभी पदाधिकारियों द्वारा किया गया।

स्कूल के प्रधानाध्यापक नारायण रेगर ने कहा कि महिला मंडल ने बहुत अच्छी सोच के साथ टिन शेड लगवाकर बच्चों के लिए उपयोगी काम किया है। अध्यक्ष प्रीति घोषल ने कहा कि महिला मंडल के सहयोग से यह कार्य संपन्न हो पाया है। लाडनूँ तहसीलदार सुरेंद्र भास्कर ने कहा कि महिला मंडल ने अच्छा कार्य किया है एवं अन्य स्कूलों में भी जाकर बच्चों की अपेक्षा के हिसाब से उन्हें कार्य करना चाहिए।

हाकम जी लक्ष्यप्रभा जी ने महिला मंडल की सराहना करते हुए कहा कि शासनमाता का आशीर्वाद हमेशा महिला मंडल को मिलता रहे। समणी मधुरप्रजा जी ने शासनमाता को याद करते हुए कहा कि उनमें समता ममता और क्षमता सभी थी। शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी ने कहा कि इस स्कूल की छोटी बच्चियों में मुझे शासनमाता का बचपन का रूप दिखाई देता है और मुझे अपने बचपन का भी स्मरण हो रहा है।

मुख्य अतिथि राष्ट्रीय ट्रस्टी डॉ० सूरज बरड़िया ने कहा कि इस स्कूल में शासनमाता और शासन गौरव कल्पलता जी ने प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की और भी बहुत से साथियों ने यहाँ से प्रारंभिक शिक्षा ली।

मंत्री नीता नाहर ने आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संयोजन कमलाबाई कठोटिया ने किया। कार्यक्रम में सभी सभा-संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित श्रावक समाज उपस्थित रहा।

त्याग तपोमय संकल्प जीवन को आनंदमय बनाएँ

महादेव कॉलोनी, कांकरोली।

डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में कांकरोली अल्प प्रवास का मंगलभावना समारोह का कार्यक्रम आयोजित हुआ। डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि भिक्षु शासन नंदनवन है। गुरुदेव के आदेशानुसार हमने कांकरोली में धर्म प्रभावना का प्रयास किया। यहाँ के श्रावक-श्राविकाओं में ३-वी के रूप में विनय, विवेक, विद्या की खासियत है जो आपको खूबसूरत बनाती है। हमारा लगभग ८४ दिन का प्रवास नया बाजार भवन, पञ्जा विहार, महादेव कॉलोनी, 9०० फीद आदि में मंगलमय साताकारी प्रवास रहा। महादेव कॉलोनी में ललित गुणमाला बाफना का शुभ घड़ी में घर का निर्माण हुआ।

आपने कहा कि नववर्ष वि०सं० २०८० के कैलेंडर के पहले पन्ने में स्त्रीच्यूल रूल्स साथ रहे। नवकार मंत्र ॐ भिक्षु की माला फेरें। चारों दिशाओं में चार लोगसस का ध्यान करें।

प्रतिदिन दिनचर्या में ज्ञानयोग, भक्तियोग, तपायोग, कर्मयोग हो। उन्होंने कहा कि हमें गिफ्ट में क्या देंगे? हमें नोट, वोट, प्लोट नहीं चाहिए। संकल्पों के गिफ्ट से जीवन की डायरी को आनंदमय बनाएँ। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

मंगलभावना समारोह में सभा अध्यक्ष प्रकाश सोनी, मंत्री विनोद चोरड़िया, सुरेंद्र टांक, चंद्रप्रकाश चोरड़िया, मूलचंद भालावत, महिला मंडल अध्यक्ष इंद्रा पगारिया, चंद्रा टुकलिया, प्रेक्षा लोढ़ा ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेममं और महादेव कॉलोनी की बहनों ने विदाई गीत का संगान किया।

साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मंत्री मनीष कच्छारा ने किया।

होली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन जसोल।

सुआदेवी भंसाली राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय जसोल स्कूल के प्रांगण में अणुव्रत समिति द्वारा होली स्नेह मिलन समारोह कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में अणुव्रत विश्व भारत सोसायटी के निर्देशन में अणुव्रत समिति अध्यक्ष पारसमल गोलेछा ने कहा कि होली को खेलने के चक्कर में हम जाने-अनजाने में कई तरह से पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं, होली में हमें पर्यावरण, त्वचा, आँख का विशेष ध्यान रखना चाहिए। स्कूल की प्रधानाचार्य शशीबाला ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति अध्यक्ष पारसमल गोलेछा, कोषाध्यक्ष भीकमचंद छाजेड़, स्कूल प्रधानाचार्य शशीबाला, उपप्रधानाचार्य सरोज भाटी, दीपक दीक्षित, इंद्रा दवे, संतोष अग्रवाल आदि सदस्यगण उपस्थित थे।

इसी क्रम में बालोदय विद्या मंदिर माध्यमिक विद्यालय में भी होली स्नेह मिलन समारोह मनाया गया। अणुव्रत समिति के तत्वावधान में बालोदय विद्या मंदिर माध्यमिक स्कूल में अणुव्रत समिति अध्यक्ष पारसमल गोलेछा ने बताया कि प्राचीन समय से आ रही रूढ़िवादिता को भूलकर वर्तमान समय को देखते हुए कलर व पानी का दुरुपयोग न कर गुलाल से तिलक लगाकर होली खेली जाए। अणुव्रत समिति पूर्व अध्यक्ष व विद्यालय संचालक पदमसिंह कंवरली ने भी होली के महत्त्व के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में उपस्थिति अच्छी रही। कार्यक्रम का संचालन राजेंद्र सिंह कंवरली ने किया।

◆ मनुष्य में जितनी क्षमता होती है, उतना उसका उपयोग नहीं होता, उसका एक कारण है संकल्प का अभाव।

—आचार्यश्री महाश्रमण

5



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स

27 मार्च - 2 अप्रैल, 2023

अभिनिष्क्रमण दिवस पर विशेष आचार्य भिक्षु को श्रद्धा से नमन

□ मुनि कमल कुमार □

यह संसार अनादिकाल से चल रहा है। इसमें आने और जाने का क्रम शाश्वत है। प्रत्येक आत्मा आठ कर्मों से आबद्ध है। व्यक्ति अपने कर्मानुसार गति जाति आयुष्य सुख-दुःख, मान-अपमान, ज्ञान आदि को प्राप्त करता है। हम यह यहाँ साक्षात् देख रहे हैं कि एक ही परिवार में जन्म लेने वाले व्यक्ति सबके पुण्य, पाप स्वतंत्र होते हैं। एक व्यक्ति हर तरह से स्वस्थ-मस्त, विश्वस्त होता है। उसी प्रकार दूसरा व्यक्ति हर दृष्टि से अस्त-व्यस्त रहता है। यह सब अपने कर्मों का ही फल मानना चाहिए। जैसे एक ही क्यारी में बोए गए फल-फूलों का आकार-प्रकार गुण भिन्न-भिन्न होता है, जबकि एक व्यक्ति ही बुवाई करने वाला है। एक ही सिंचाई करने वाला है, एक ही व्यक्ति हर तरह से सुरक्षा करने वाला है। एक ही तरह की मट्टी है, परंतु बीज के अनुसार ही पौधे फल-फूल, पत्ते होते हैं, ठीक उसी प्रकार व्यक्ति अपने कर्मानुसार ही सब कुछ प्राप्त करता है।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु एक ऐसे व्यक्ति थे, जिनके जन्म से पूर्व ही माँ को सिंह का स्वप्न आया था और हम उनके जीवन की ओर देखते हैं तो लगता है जन्म से लेकर अंतिम समय तक वे सिंह की तरह तेजस्वी बने रहे। लघुवय में पिता का स्वर्गवास हो गया। युवा अवस्था में पत्नी का वियोग हो गया, फिर भी आप निरंतर गतिमान बने रहे। दीक्षा के पश्चात् आप अध्ययन और साधना की गहराई में उतरे तब आपको साधुत्व का

बोध हुआ। आप जब कभी भी अपने दीक्षा प्रदाता गुरुदेव श्री रघुनाथ जी के पास अपनी जिज्ञासा का समाधान पाने जाते तब आपको समुचित उत्तर नहीं मिलता। फिर भी आप स्थिरमना गुरु सेवा के साथ साधना में लगे रहे।

एक बार मेवाड़ के प्रसिद्ध क्षेत्र राजनगर के श्रावकों की अश्रद्धा के समाचार मिले, तब पूज्यप्रवर ने सोचा अगर राजनगर के श्रावक श्रद्धाहीन हो गए तो इसका असर पूरे मेवाड़ पर हो सकता है। पूज्यप्रवर ने सोचा भीखण ज्ञानी-ध्यानी और पापभीरू हैं, इसमें हर तरह की क्षमता है, इसे राजनगर भेजना चाहिए। पूज्यप्रवर का आदेश पाकर भीखणजी राजनगर पधारे और देखा कि पूज्यप्रवर ने फरमाया था कि राजनगर के श्रावक शंकाशील हो गए हैं। साधु-साध्वियों के दर्शन भी नहीं करते, परंतु यहाँ के लोग तो श्रद्धाशील हैं, तभी सभी दर्शन प्रवचन का पूरा लाभ ले रहे हैं। एक दिन भीखणजी स्वामी ने वहाँ के वरिष्ठ श्रावकों से सारी बात की, तब श्रावकों ने स्पष्ट कहा कि यह तो श्रद्धा, भक्ति केवल आपके प्रति है, संघ के प्रति नहीं है। भीखणजी ने अश्रद्धा का कारण पूछा तब श्रावकों ने स्पष्ट कहा कि आज केवल चले बनाने और स्थानक बनवाने का क्रम ही

नजर आ रहा है। साधु अपने आचार को विस्मृत कर चुके हैं। वस्त्र पात्र आदि की कोई सीमा नहीं रही, इत्यादिक अनेक कारण बताए। भीखणजी ने सोचा इनकी बात अन्यथा नहीं है। श्रावकों ने निवेदन किया कि आप ज्ञानी संत हैं। आगम को पढ़कर बताएँ कि हमारी शंकाएँ निरर्थक तो नहीं हैं। स्वामी जी ने उस चतुर्मास में दो-दो बार आगम पढ़े और देखा श्रावकों की शंकाएँ निरर्थक नहीं हैं। परंतु स्वामी जी ने श्रावकों से कहा—मैं गुरुदेव के दर्शन कर सब निवेदन कर दूँगा, परंतु आप अपनी श्रद्धा को अटल रखें। स्वामी जी ने चतुर्मास के बाद गुरुदर्शन कर सारी बात रखी, परंतु कोई हल नहीं निकला। फिर भी स्वामी जी दो वर्षों तक प्रतीक्षा करते रहे, परंतु जब देखा यहाँ कोई समाधान मिलने वाला नहीं है, तब चैत्रसुदी नवमी को बगड़ी नगर से अभिनिष्क्रमण किया। अभिनिष्क्रमण के बाद आपको आहार-पानी, स्थान, वस्त्र आदि का भयंकर अभाव रहा, परंतु स्वामी जी ने हर स्थिति को समभाव से सहन किया। उसी का सुपरिणाम है यह हमें नंदनवन-सा तेरापंथ धर्मसंघ मिला है। हम सब स्वामीजी के मूल सिद्धांतों को समझकर औरों को भी समझाने का प्रयास करें, यही अभिनिष्क्रमण दिवस पर सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

◆ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

— आचार्यश्री महाश्रमण



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

पीलीबंगा।

कालू निवासी पूनमचंद सांड के सुपुत्र सुमित-कल्पना सांड के प्रांगण में पुत्ररत्न का जन्म हुआ। जिसका नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक राजकुमार छाजेड़, सतीश पुगलिया ने विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। तेयुप, पीलीबंगा की ओर से नामकरण पत्रक व मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। पीलीबंगा परिषद से रूपेश सुराणा और हनुमानगढ़ परिषद् से सिद्धार्थ बांठिया भी सहयोगी रहे।

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी शांतिदेवी-निर्मल तातेड़ के सुपुत्र एवं पुत्रवधू विनय-वर्षा तातेड़ के नवजात पुत्र रत्न का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक देवेन्द्र डागा, भरत गोलछा और विपिन बोधरा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

भरत गोलछा ने नामकरण पत्रक का वाचन किया। देवेन्द्र डागा ने तातेड़ परिवार को शुभकामनाएँ प्रेषित की।

स्कूल का शिलान्यास

सूरत।

नवकार चेरिटेबल ट्रस्ट परिवार द्वारा एक नई पहल नया उपक्रम विद्या संस्थान के रूप में नवकार किड्स स्कूल का शिलान्यास संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, बजरंग बैद, सहयोगी सतीश संकलेचा ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

श्री नवकार परिवार ने संस्कारकों व वहाँ उपस्थित सभी महमानों का आभार ज्ञापन किया। नवकार किड्स स्कूल के नवकार चेरिटेबल ट्रस्ट परिवार को तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

गंगाशहर।

दिलीप चोपड़ा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक देवेन्द्र डागा और विपिन बोधरा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया। इस अवसर पर तेयुप, गंगाशहर के चैतन्य रांका और विकास चोपड़ा सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

जैन संस्कारक देवेन्द्र डागा ने चोपड़ा परिवार को नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ पर बधाई प्रेषित की।

सुखी दंपति कार्यशाला का आयोजन

पालघर।

मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में 'सुखी दांपत्य जीवन का राज' कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि धरती पर स्वर्ग कब उतर आता है? जब किसी परिवार में खुशहाली छाई रहती है। रिश्ते बनाना आसान होता है। पर रिश्ते निभाना मुश्किल होता है। आज के परिवेश में शिक्षा का स्तर बढ़ा है। परिवार में रिश्ते की अहम भूमिका होती है। पति-पत्नी में पति अगर पतंग बन जाए तो पत्नी डोर बन जाए। आपस में सामंजस्य का सेतु बनाए रखें। अपने घर को एयर कंडिशन बनाने से पहले दिमाग को एयर कंडिशन बनाएँ। आग्रहवृत्ती से बचें। सहनशील बनें। ताकि परिवार में मधुर सामंजस्य चौरकाल तक बना रहे।

खुले दिल से एक-दूसरे को समझने की कोशिश करें। तभी आपका घर स्वर्गीय सुख, खुशहाल, जीवन आनंद की अनुभूति करता रहेगा।

मुनि भरत कुमार जी ने सुखी दांपत्य के अनमोल प्रेरणादायी गुर बताए। महिला मंडल द्वारा सुखी दांपत्य जीवन पर रोचक परिसंवाद की प्रस्तुति दी। सफाले, बोईसर का श्रावक समाज एवं स्थानीय स्थानकवासी, मूर्तिपूजक समाज की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन कांति परमार ने किया।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम	अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर		5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना		5,00,000
* श्री राकेश कठोटिया, लाडनू-मुंबई		5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई		5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा		5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत		5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई		5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई		5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा		5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा		5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोधरा, छपर-सिलीगुड़ी		5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर		5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर		5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत		5,00,000
* श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई		5,00,000

मनोनुशासनम्

□ आचार्य तुलसी □



ध्यान का फल

इसे स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया—पुराने जमाने की बात है। मगधदेश में देवरापुर नाम का नगर था। वहाँ दो मित्र थे। एक का नाम राम था। वह बनिए का बेटा था। दूसरे का नाम नागदत्त था। वह ब्राह्मण का बेटा था। उन दोनों में बहुत प्रेम था। वे सुख से रह रहे थे। एक दिन वहाँ राज्यविद्रोह हो गया। चारों ओर लूट मच गई। तब वे दोनों वहाँ से दौड़े और दक्षिणापथ की ओर चले गए। एक बार वे दोनों काठ लाने के लिए जंगल में गए। वहाँ महाबल नाम के साधु कायोत्सर्ग की मुद्रा में खड़े थे। ध्यानलीन होने के कारण वे पर्वत की भाँति अडोल थे। उन्होंने साधु को देखा। वह जीवन में पहला ही अवसर था। वे उन्हें अपलक देखते रहे। थोड़ी देर बाद एक बड़ा-सा साँप बिल में से निकला और सीधा साधु के पास जा पहुँचा। उन्हें डसकर वापस बिल में घुस गया। साधु अब भी वैसे ही खड़े थे। ध्यान से जरा भी विचलित नहीं हुए। उनके शरीर में विष भी नहीं व्यापा। राम और नागदत्त को बहुत आश्चर्य हुआ। साधु ने कायोत्सर्ग पूर्ण किया। वे साधु के पास गए, वंदना की और बोले—भगवन्! साँप ने आपको काटा तो आप पर असर नहीं हुआ? आप इस प्रकार कायोत्सर्ग में रहते हैं, क्या आपको सर्दी-गर्मी से कष्ट नहीं होता? साधु ने कहा—महानुभावो! जो ध्यान-कोष्ठ में स्थिर होता है, वह बाहरी स्थिति से प्रभावित नहीं होता। सर्दी-गर्मी आदि से बाधित नहीं होता, यह मेरा अनुभव है।

इस ध्यान-कोष्ठ में शीत लहर का कोई असर नहीं होता और न तेज हवा से उद्वेलित अग्नि भी अपना प्रभाव दिखा पाती है। भयंकर कोलाहल वहाँ बाधा नहीं डाल सकता और साँप आदि विषैले जंतु वहाँ पीड़ा उत्पन्न नहीं कर सकते। इन शारीरिक कष्टों की क्या बात है, वहाँ मानसिक कष्ट भी नहीं पहुँच पाते हैं। ईर्ष्या विषाद, शोक आदि तिन भी मानसिक कष्ट हैं, वे सब ध्यानलीन व्यक्ति के सामने निर्वीर्य बन जाते हैं।

(२) ऊनोदरिका-रसपरित्यागोपवास-स्थान-मौन-प्रतिसंलीनता- स्वाध्यायभावना व्युत्सर्गास्तत् सामग्र्यम्।।

(३) अल्पाहार ऊनोदरिका।।

(४) दुग्धादिरसानां परिहरणं रसपरित्यागः।।

(५) अशनत्याग उपवासः।।

- (२) ऊनोदरिका, रस-परित्याग, उपवास, स्थान-आसन, मौन, प्रतिसंलीनता, स्वाध्याय, भावना और व्युत्सर्ग—ये सब ध्यान के सहायक तत्त्व हैं।
- (३) ऊनोदरिका का अर्थ है—कम खाना, परिमित खाना, आँतों पर किंचित भी भार न डालना।
- (४) यथोचित रीति से दूध आदि रसों का वर्जन करना रसपरित्याग है।
- (५) यथाशक्ति—मन आर्त न हो, वैसे अशन का त्याग करना उपवास है।

ध्यान और आहार

ध्यान का संबंध जितना मन से है, उतना ही शरीर से है। मस्तिष्क जितना भार-मुक्त होता है, उतना ही ध्यान अच्छा होता है। मस्तिष्क का भार-मुक्त होना आमाशय, पक्वाशय और मलाशय की शुद्धि पर निर्भर है। इनकी शुद्धि के लिए भोजन पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। जो आदमी भरपेट खाता है, वह ध्यान नहीं कर सकता। जो ध्यान करना चाहे उसके लिए पेट को हल्का रखना—कम खाना बहुत आवश्यक है।

आयुर्वेद के अनुसार भूख के चार भाग किए जाते हैं। दो भाग भोजन करना चाहिए, एक भाग पानी और एक भाग भोजन के बाद बनने वाली वायु के लिए छोड़ देना चाहिए। दो भाग खाना परिमित भोजन है। परिमित भोजन करना ऊनोदरिका की मर्यादा है।

भोजन के एक घंटा बाद पानी पीने और वायु बनने पर पेट हल्का रहे, कोई भार प्रतीत न हो तो समझा जा सकता है कि भोजन परिमित हुआ है।

अधिक खाने वाले व्यक्ति का अपानवायु दूषित होता है। उसके मानसिक और बौद्धिक निर्मलता नहीं होती। बहुत खाने से पाचन ठीक नहीं होता। उससे वायु-विकार (गैस) बढ़ जाता है। मन की एकाग्रता के लिए वायु-विकार संभवतः सबसे बड़ा विघ्न है। इन सब कारणों के आधार पर हम ध्यान और ऊनोदरिका का संबंध समझ सकते हैं।

प्रश्न—ध्यान करने वाले व्यक्ति के लिए स्निग्ध और मधुर भोजन का विधान है, उस स्थिति में रस-परित्याग कैसे आवश्यक हो सकता है?

उत्तर—ध्यान के लिए वीर्य-शुद्धि या ब्रह्मचर्य बहुत आवश्यक है। दूध, घी आदि रसों का प्रचुर सेवन करने से वीर्य पर्याप्त मात्रा में बढ़ता है। वह कामवासना को उत्तेजित करता है। उससे मानसिक चंचलता बढ़ती है और वीर्य दोष उत्पन्न होते हैं। यदि वीर्य-संचित रहता है तो मन की चंचलता बनी रहती है और यदि उसका विसर्जन किया जाता है तो उससे स्नायविक दुर्बलता बढ़ती है। स्नायविक दुर्बलता वाले व्यक्ति के मन का संतुलन नहीं हो सकता। मानसिक संतुलन के अभाव में ध्यान की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इसीलिए रसों का प्रचुर मात्रा में सेवन करना ध्यानाभ्यासी के लिए हितकर नहीं है।

रस-परित्याग का संबंध अस्वादवृत्ति से है। जिसका मन स्वाद-लोलुपता में अटका रहता है उसके लिए ध्यान करना बहुत कठिन है, ध्यानाभ्यास के लिए वैषयिक अनुबंधों से मुक्त होना बहुत आवश्यक है। वैषयिक अनुबंधों में स्वाद का अनुबंध बहुत तीव्र होता है। उसके परिणामों पर विचार करने पर ध्यान और यथावकाश रस-परित्याग का संबंध बोध सहज ही हो जाता है।

रस-परित्याग की निश्चित मर्यादा करना कठिन है। फिर भी उसके विषय में कुछ रेखाएँ खींची जा सकती हैं—

- (१) ध्यानाभ्यासी के लिए अधिक मात्रा में दही खाना उचित नहीं है। उससे शारीरिक और बौद्धिक जड़ता उत्पन्न होती है।
- (२) तली हुई चीजों से पाचन पर अनावश्यक भार पड़ता है, इससे वे भी हितकर नहीं हैं।
- (३) चीनी से अम्लता बढ़ती है और रक्त में गर्मी बढ़ने के कारण कुछ उत्तेजना भी बढ़ती है। इसलिए चीनी का संयत प्रयोग ही हितकर हो सकता है।
- (४) दूध दिन-भर में पाव या आधा सेर लिया जा सकता है किंतु मस्तिष्क-संबंधी कार्य के लिए उससे निष्पन्न होने वाली शक्ति की खपत हो तो।
- (५) वायु और पित्त के शमन के लिए एक या दो तोला घी लिया जा सकता है किंतु उसकी अधिक मात्रा अपेक्षित नहीं है। घी सर्वाधिक वीर्यवर्धक वस्तु है। उसके अधिक सेवन का अर्थ है—अधिक वीर्य की उत्पत्ति और वीर्य के अधिक होने का अर्थ है वासना को उभारना। यह स्थिति ध्यान के लिए अनुकूल नहीं है।

जैन साधना-पद्धति में दीर्घकालीन ध्यान को बहुत महत्त्व दिया गया है। तीन घंटा ध्यान करना ध्यान की सामान्य काल-मर्यादा है। उसकी दीर्घकालीन मर्यादा है—कई दिनों या महीनों तक लगातार ध्यान करना। भगवान् महावीर ने सोलह दिन-रात तक निरंतर ध्यान किया था। इस प्रकार का ध्यान वही व्यक्ति कर सकता है जो भूख पर विजय पा लेता है।

केवल भूखा रहना अनशन नहीं है किंतु ध्यान की साधना के लिए भूख पर विजय पा लेना अनशन है। यह शरीर को कष्ट देने की स्थिति नहीं है किंतु आत्मानुभूति की गहराई में बैठकर सहज आनंद का स्पर्श करने की स्थिति है।

भूखा रहने से शारीरिक और मानसिक ग्लानि न हो, स्वाध्याय और ध्यान में विघ्न न आए तब तक उपवास किए जा सकते हैं। यही उपवास की मर्यादा है। सबकी शक्ति समान नहीं होती, इसलिए उसकी मर्यादा भी भिन्न-भिन्न होती है। दीर्घकालीन ध्यान के लिए उपवास करना स्वतः प्राप्त है। अतः अनशन ध्यान की विशिष्ट साधना का सहायक तत्त्व है।

(६) शरीरस्य सिरीत्वापादनं स्थानम्।।

(७) ऊर्ध्व-निषीदन-शयनभेदात् त्रिधा।।

(८) समपाद-एकपाद-गृध्रोड्डीन-कायोत्सर्गादीनि ऊर्ध्वस्थानम्।।

(९) गोदोहिका-उत्कटुक-समपादपुता-गोनिषधिका-हस्तिशुण्डिका- पद्मवीर सुख-कुक्कुट-सिद्ध-भद्र-वज्र-मत्स्येन्द्र-पश्चिमोत्तान- महामुद्रासंप्रसारण-भूनमन-कंदपीडनादीनि निषीदनस्थानम्।।

(१०) दण्डायत-आम्रकुब्जिका-उत्तान-अवमस्तक-एकपार्श्व-ऊर्ध्वशयनलकुट-मत्स्यपवनमुक्त-भुजंग-धनुरादीनि-शयनस्थानम्।।

(११) सर्वांग शीर्षादीनि विपरीत क्रियापादकानि।।

(६) विधिवत् शरीर को स्थिर बनाकर बैठना स्थान—आसन कहलाता है। यह कायगुप्ति है।

(७) स्थान तीन प्रकार के होते हैं—(१) ऊर्ध्व-स्थान, (२) निषीदन-स्थान, (३) शयन-स्थान।

(८) खड़े होकर किए जाने वाले स्थानों का नाम 'ऊर्ध्व-स्थान' है। उसके कुछ प्रकार ये हैं—

(१) समपाद, (२) एकपाद, (३) गृध्रोड्डीन, (४) कायोत्सर्ग।

(९) बैठकर किए जाने वाले स्थानों का नाम 'निषीदन स्थान' है। उसके कुछ प्रकार ये हैं—

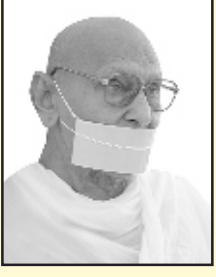
(१) गोदोहिका, (२) उत्कटुकासन, (३) समपादपुता, (४) गोनिषधिका, (५) हस्तिशुण्डिका, (६) पद्मासन, (७) वीरासन, (८) सुखासन, (९) कुक्कुटासन, (१०) सिद्धासन, (११) भद्रासन, (१२) वज्रासन, (१३) मत्स्येन्द्रासन, (१४) पश्चिमोत्तानासन, (१५) महामुद्रा, (१६) संप्रसारणभूनमनासन, (१७) कंदपीडनासन।

(१०) लेटकर किए जाने वाले स्थानों का नाम 'शयन-स्थान' है। उसके कुछ प्रकार ये हैं—

(१) दंडायतशयन, (२) आम्रकुब्जिकाशयन, (३) उत्तानशयन, (४) अवमस्तकशयन, (५) एकपार्श्वशयन, (६) ऊर्ध्वशयन, (७) लकुटासन, (८) मत्स्यासन, (९) पवनमुक्तासन, (१०) भुजंगासन, (११) धनुरासन।

(११) सर्वांगासन और शीर्षासन में विपरीतकर्णी वाले स्थान हैं।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □ बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(३८) प्रत्ययार्थञ्च लोकस्य, नानाविधविकल्पनम्।
यात्रार्थं ग्रहणार्थञ्च, लोके लिङ्गप्रयोजनम्।।

लोगों को यह प्रतीति हो कि ये साधु हैं, इसलिए नाना प्रकार के वेश की परिकल्पना की गई है। जीवन-यात्रा को निभाना और 'मैं साधु हूँ', ऐसा ध्यान आते रहना—इस लोक में वेश-धारण के ये प्रयोजन हैं।

प्रश्न होता है कि मुनि के लिए वेश की क्या आवश्यकता है? प्रस्तुत श्लोक में वेश-धारण के तीन कारण बतलाए हैं—(१) लोक-प्रतीति, (२) संयम-निर्वाह, (३) स्व-प्रतीति।

ये तीनों कारण मुनि की बाह्य और आंतरिक पवित्रता के हेतु बनते हैं।

(१) मुनि को अपने स्व-वेश में देखकर लोगों को यह प्रतीति होती है कि यह 'मुनि' है। इसके साथ हमारा क्या-कैसा व्यवहार होना चाहिए, इसके प्रति हमारा क्या कर्तव्य है, आदि।

(२) संयम-निर्वाह के लिए शरीर-रक्षा आवश्यक होती है। जहाँ शरीर है उसके निर्वहन की भावना है, वहाँ वस्त्रों का अपना स्थान है। जो व्यक्ति निष्पत्तिकर्म हो जाता है, वह चाहे वस्त्र रखे या नहीं, यह उसकी अपनी इच्छा है। किंतु जो शरीर को चलाता है, उसे उसकी रक्षा भी करनी पड़ती है। वस्त्र शरीर निर्वाह का एक उपाय है।

(३) तीसरा कारण है—स्व-प्रतीति यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। मुनि-वेश में अपने को देखकर व्यक्ति के मन में यह अध्यवसाय निरंतर बना रहता है। कि 'मैं साधु हूँ, मुझे यह करना है, यह नहीं करना है। अपने अस्तित्व-बोध का यह अनन्य उपाय है। इससे जागरूकता और अप्रमत्तता का प्रादुर्भाव होता है।'

(३९) अथ भवेत् प्रतिज्ञा तु, मोक्षसद्भावसाधिका।
ज्ञानञ्च दर्शनं चैव, चारित्रं चैव निश्चये।।

यदि मोक्ष की वास्तविक साधना की प्रतिज्ञा—संकल्प हो तो निश्चय-दृष्टि से उसके साधन ज्ञान, दर्शन और चारित्र ही हैं। मोक्ष के लिए किन-किन चीजों की आवश्यकता है? सवस्त्र होना चाहिए या निर्वस्त्र? यह प्रश्न गौण है। मोक्ष शरीर नहीं है। वस्त्र, भोजन, पानी आदि शरीर की पूर्ति के साधन हैं। मुक्ति आत्मा की पूर्ण शुद्धावस्था है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र का चरम विकास मोक्ष है। अतः अंतरंग साधन ये हैं। वेश आदि बहिरंग साधन हैं।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरुमल 'लाडनू' □ धर्म बोध

भाव धर्म

प्रश्न १८ : क्षायोपशमिक भाव के कितने प्रकार हैं?

उत्तर : क्षायोपशमिक भाव के बत्तीस प्रकार हैं—

(१) ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से आठ—(१) मति ज्ञान, (२) श्रुत ज्ञान, (३) अवधि ज्ञान, (४) मनःपर्यव ज्ञान, (५) मति अज्ञान, (६) श्रुत अज्ञान, (७) विभंग अज्ञान, (८) भणन-गुणन।

(२) दर्शनावरणीय से आठ—(१-५) पाँच इंद्रिय, (६) चक्षु दर्शन, (७) अचक्षु दर्शन, (८) अवधि दर्शन।

(३) मोहनीय से आठ—(१) सामायिक चारित्र, (२) छेदोपस्थापनीय चारित्र, (३) परिहास विशुद्धि चारित्र, (४) सूक्ष्म संपराय चारित्र, (५) देश विरति, (६) सम्यग् दृष्टि, (७) मिथ्या दृष्टि, (८) सम्यग् मिथ्या दृष्टि।

(४) अंतराय से आठ—(१) दान लब्धि, (२) लाभ लब्धि, (३) भोग लब्धि, (४) उपभोग लब्धि, (५) वीर्य लब्धि, (६) बाल वीर्य, (७) पंडित वीर्य, (८) बाल-पंडित वीर्य।

प्रश्न १९ : पारिणामिक भाव के कितने प्रकार हैं?

उत्तर : पारिणामिक भाव के दो प्रकार हैं—

(१) सादि पारिणामिक—दिशादाह, विद्युत्, उल्कापात आदि।

(२) अनादि पारिणामिक—षट् द्रव्य, भव्यत्व, अभव्यत्व, लोक, अलोक। पारिणामिक जीवाश्रित व अजीवाश्रित दोनों होता है।

प्रश्न २० : जीवाश्रित पारिणामिक के कितने भेद हैं?

उत्तर : जीवाश्रित पारिणामिक के दस भेद हैं—(१) गति, (२) इंद्रिय, (३) कषाय, (४) लेश्या, (५) योग, (६) उपयोग, (७) ज्ञान, (८) दर्शन, (९) चारित्र, (१०) वेद।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण □

आचार्य तुलसी

अणगार मेघ



मेघमुनि को प्रभु की वाणी सुनते-सुनते जाति-स्मरण हो आया। झुलसते हुए मैदान को देखकर रोंगटे खड़े हो गए। प्रभु के पैरों में गिरकर दोनों की आलोचना की। मन को स्थिर करके पुनः व्रतों में सुस्थिर बने। अपने आपको संघ के प्रति समर्पित करते हुए मेघमुनि ने कहा—'प्रभुवर! मैं मेरी इन दो आँखों के सिवाय समूचा शरीर साधु-संतों की परिचर्या के लिए समर्पित करता हूँ। आप जैसे भी चाहें इसका उपयोग करें। केवल ये दो आँखें मैं ईर्याशोधन के लिए मेरे अधिकार में रखता हूँ। सारा शरीर आपके लिए समुपस्थित है।'

यों समर्पित होकर उत्कट परिचर्या, संयम-साधना, तप-आराधना में जुटे। ग्यारह अंगों का अध्ययन किया। गुणरत्न संवत्सर आदि विभिन्न प्रकार के तप किए। अंत में सब संतों से क्षमायाचना करके प्रभु की आज्ञा लेकर एक महीने के अनशन में समाधिमरण प्राप्त किया। सर्वार्थसिद्ध विमान में उत्पन्न हुए। वहाँ से महाविदेह में उत्पन्न होकर मोक्ष में जाँएंगे।

नंदीषेणकुमार

नंदीषेणकुमार राजगृह के महाराज श्रेणिक के पुत्र थे। भगवान् महावीर का उपदेश सुनकर कुमार विरक्त हो गया। जब साधु बनने को तैयार हुआ तब देववाणी हुई—'नंदीषेण! तुम्हारे अभी भोगवाली कर्म अवशेष हैं, इसलिए तुम अभी अनगार मत बनो।' नंदीषेण ने बड़े साहस के साथ कहा—'क्या मैं इतना कायर और सत्त्वहीन हूँ? सभी भोग्यकर्मों को तप-संयम के द्वारा क्षय कर दूँगा पर संयम अवश्य लूँगा। मेरी साधना में कोई बाधक नहीं बन सकता।' यों कहकर दीक्षा ले ली। विविध भौतिकी की तप-साधना में तल्लीन हो गए। तप के प्रभाव से अनेक सिद्धियाँ प्राप्त कर लीं।

एक दिन भिक्षार्थ गए। संयोगवश एक वेश्या के घर पहुँच गए। भिक्षा का योग पूछा। तब कटाक्ष फेंकती वेश्या ने कहा—'यदि पास में कुछ है तो योग बहुत है, भूखे फकीरों के लिए यहाँ कुछ भी नहीं है।'

वेश्या का व्यंग्य सुनकर मुनि का अहं भभक उठा—इसने मुझे पहचाना ही नहीं और मुझे भिखमंगा समझ लिया। फिर क्या था? अपने लब्धि-बल का उन्होंने प्रयोग किया और धन का ढेर लग गया। मुनि ने धूरकर उस वेश्या की ओर देखा और जाने लगा। वेश्या भी इन बातों में विशेष दक्ष थी। आगे आकर बोली—'उठाइए अपना धन, मुझे मुफ्त का धन नहीं चाहिए। मेरे साथ रहकर कुछ देना चाहो तो सादर आमंत्रित हैं अन्यथा मैं इस हराम के धन का क्या करूँ?'

वेश्या के दो-चार वाक्य-बाण और नयन-बाणों से ही मुनि फिसल गए। साधु-वेश को तिलांजलि दे दी, पर मन में सात्त्विक ग्लानि अवश्य थी। सोच रहे थे—मैं राजपाट छोड़कर साधु बना। कहाँ फँस गया, पर करे क्या? वेश्या के यहाँ रहे तो सही पर मन में संकोच अवश्य था। उस उदासी को मिटाने के लिए एक संकल्प कर लिया कि मैं प्रतिदिन दस व्यक्तियों को प्रतिबोध देकर ही अन्न-जल ग्रहण करूँगा। इस दुष्कर प्रतिज्ञा को कई वर्ष हो गए।

एक दिन नौ व्यक्ति तो समझ गए। पर दसवाँ एक स्वर्णकार मिला। उसे जब प्रतिबोध देने लगे तब व्यंग्य कसते हुए उसने कहा—'यह क्या ढोंक रचा रखा है? स्वयं तो साधुत्व को छोड़ वेश्या के साथ रह रहे हो और दूसरों को प्रतिबोध देने चले हो।' यों इस बक-झक में काफी समय हो गया। भोजन के लिए बुलाने को पहले लड़का आया फिर वेश्या स्वयं आई। नंदीषेण ने कहा, 'अभी नौ ही प्रतिबुद्ध हुए हैं, दसवाँ बाकी है।' वेश्या ने सहजता से कहा—'दसवें स्वयं आप ही बन जाइए, पर खाना तो खाइए।'

नंदीषेण का सोया आत्मबल जग गया। भगवान् महावीर के समवसरण की ओर चल पड़े। वेश्या ने बहुत कहा पर नंदीषेण अब रुकने वाले नहीं थे। प्रभु के पास जाकर अपने पापों का प्रायश्चित्त किया। पुनः संयम में सुस्थिर होकर तपस्या में लीन हो गए और तपःसाधना करते हुए आयु पूर्ण कर देव बने।

(क्रमशः)



भगवान महावीर पर विशेष

जय महावीर प्रभु

● साध्वी अणिमाश्री ●

आओ मिलकर महावीर की, गौरव-गाथा गाएँ हम।
वीतराग प्रभु महावीर को, सविनय शीष झुकाएँ हम।।
जय जय वीर प्रभु जय महावीर प्रभु

चेत सुदी तेरस को माता, त्रिशला के घर जन्म लिया।
जन्मोत्सव पर देवराज ने, देखो उत्सव खूब किया।
महाराजा सिद्धार्थ ने भी, खुश हो सबको दान दिया।
नर-नारी सारे हैं हर्षित, पुलकित सबका आज जिया।
कहते हैं सारे पुरवासी, मिलकर मोद मनाएँ हम।
वीतराग प्रभु महावीर को, सविनय शीष झुकाएँ हम।।
जय जय वीर प्रभु जय महावीर प्रभु

वसुंधरा का कण-कण प्रमुदित, बज रही चिंहुदिशि शहनाई।
आज चमन में नई बहारें, कलि-कलि है विकसाई।
सजी हुई है दशों दिशाएँ, थिरक रही है अरुणाई।
वंदनवार सजे हैं घर-घर, अधर-अधर खुशियाँ छाई।
जन-जन के मन बोल रहे हैं, नूतन साज सजाएँ हम।
आओ मिलकर वीरप्रभु की, गौरव गाथा गाएँ हम।
जय जय वीर प्रभु जय महावीर प्रभु।।

सारी सुख-सुविधाएँ तज कर, संयम-पथ पर चरण धरे।
आत्म-गौरव को पाने खातिर, कष्टों से वे नहीं डरे।
ध्यान-साधना घोर तपस्या, कर्मों का संहार करे।
जो भी ध्याए ध्यान प्रभु का, शाश्वत-सुख को सदा वरे।
तन्मय बनकर महावीर का, आओ ध्यान लगाएँ हम।
वीतराग प्रभु महावीर को, सविनय शीष झुकाएँ हम।
जय जय वीर प्रभु जय महावीर प्रभु।।

समता ही है धर्म हमारा, महावीर ने बतलाया।
समतामय हो कर्म हमारा, महावीर ने सिखलाया।
रोम-रोम में जागे समता, यही पंथ है दिखलाया।

जीव-जगत के साथ मित्रता करना सबको समझाया।
मैत्री, समता, संयम द्वारा शिव-रमणी को पाएँ हम।
वीतराग प्रभु महावीर को, सविनय शीष झुकाएँ हम।
जय जय वीर प्रभु, जय महावीर प्रभु।।

लय : वंदे मातरम् वंदे मातरम्----

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के प्रति उद्गार

अहंम

● साध्वी ऋजुप्रभा ●

शासनमाता रे! गौरव गाथा रे!
गुरुवर गुरुवर रोम-रोम में दिल में भारे वास रे
गुरु दिलवासी ई गण रा रत्ना में ये हां खास।।अं।।
ममतामय आँचल हो भारो, जो भी आतो पास रे,
सब री सुगता सूझवूझ स्यूं, करतां पूरी आस।।१।।
असाधारण प्रतिभाधारी, रचना में अनूठो रास रे,
पूर्ण समर्पित इंगित पर चल, पायो दिव्य उजास।।२।।
स्वप्न दिखाया स्वर्णिम कल रा बड़ गई म्हांरी प्यास रे,
अणचिंत्यों ये दृश्य दिखायो, छोड़यो क्यूं ये श्वास।।३।।
समता री उत्कृष्ट साधना, हर स्थिति में अभ्यास रे,
कर्म निर्जराहित अर्पित जीवन रो हर उच्छ्वास।।४।।
श्रेष्ठ लगे हर श्रमणी गण री दियो खुलो आकाश रे,
उद्बोधन दे शक्ति जगता करतां ओ ही प्रयास।।५।।
सबस्यूं लंबी सेवा गण री, रच्यो नयो इतिहास रे,
गुण मंडित जीवन स्यूं पावां, मैं भी प्रगति प्रकाश।।६।।

लय : मनड़ो लाग्यो रे----

अहंम

● साध्वी महिमाश्री ●

सद्गुण सुमनों से सुरभित था जीवन
शासनमाता को, करते शत-शत वंदन
तेरी महिमा अपरंपार, जग सारा यह गाए
तेरी गौरव गाथा, गुण गा गा हरषाये
तेरा नाम रटते जाएँ, सिमरन करते जाएँ।
सिमरन करते जाएँ, तेरा नाम रटते जाएँ।।
छोटी-सी वय में साध्वीप्रमुखा पद पाया
जीवन सफर को शानदार था बनाया
सुंदर आभामंडल तेरा, सबके मन भाए
तेरे उपकारों को हम, भूल न पाएँ
अद्भुत कहानी तेरी आज सुनाएँ।।
नारी से देवी का रूप था तुझ में
स्वर्ग लोक से उतरी, इस तेरापंथ संघ में
गण गणपति के प्रति आस्था गहरी, तेरी भक्ति सराएँ
कैसे हो विकास गण का सपना संजोया
एक-एक साध्वीश्री का हौसला बढ़ाया।।
शासनमाता का अलंकरण तुमने पाया
दिल्ली महरोली में अंतिम प्रवास पाया
छोड़ा श्वास गुरु चरणों में, सब तेरा भाग्य सराएँ
होली का शुभ अवसर तुझको है भाए
प्रथम पुण्य तिथि है आई कुसुम चढ़ाएँ।।

तेरी वो बातें अब यादें बन गई, बीती जो घड़ियाँ स्मृति
पटल पे रह गई
तेरी मूरत तेरी सूरत रह-रह, याद आए सुर ताल कुछ
ना जानू बस तुमसे प्रीत है
जो भी निकला भाव दिल से वही मेरा गीत है।।

लय : चाहा है तुझको---

अहंम

● साध्वी प्रांशुप्रभा ●

माँ की ममता पाकर हम धन्य हो गए।
माँ सी समता पाकर हम कृतपुण्य हो गए।
तेरी क्षमता से विभूषित था श्रमणी गण।
तेरे संस्कारों से संस्कारित यह नंदनवन।
तेरे आशीर्वाद से हम धन्य-धन्य हो गए।
तेरे जाने से हम गमगीन हो गए।।

तेरे मुख में अद्भुत ओज था।
तेरी नजर में करुणा का स्रोत था।
तेरे हृदय में वत्सलता का अनुस्रोत था।
तेरी वाणी में स्नेह का अजस्र स्रोत था।।

तेरे शासन में हम आकर निहाल हो गए।
तेरी शासना से हम खुशहाल हो गए।
दी तुमने भैक्षव गण को नयी पहचान।
तेरे आयाम गण के नाम हो गए।।

तेरी शिक्षाएँ अपनाऊँ मैं।
जीवन धन्य बनाऊँ मैं।
पाकर तेरा आशीर्वर।
लक्षित मंजिल पाऊँ मैं।।

तेरे संदेश हमारे लिए अमृत कोश हो गए।
तेरे जाने से हम खामोश हो गए।
तेरी सृजनशीलता आए हममें।
शासनमाता के चिह्नदिक जय घोष हो गए।।

अहंम

● साध्वी चारुलता ●

श्रद्धा से शासनमाता, हम नाम तेरा ध्याये।
अजपाजप मंत्र तेरा, हम रोज गुनगुनाएँ।।

इमरतमयी तेरी वाणी, हर शब्द बने वरदानी,
स्नेह भरा जिकारा, दुनिया थी जिसकी फानी,
प्यारे हैं सबके मानस, संदेश सुधा पिलाएँ।

अनुभवों के नीर से, सींचा था इस चमन को,
वात्सल्य अपना लुटाया, जीता था सबके मन को,
दर्पण है मन का सना, बस याद तेरी आए।

मेरा जीवन मेरा दर्शन, तेरी अमर निशानी,
लेखन हो चाहे भाषण, करे ना कोई सानी,
पौरुष के पुण्य प्रकाश तुमको आज हम बुलाएँ।

तब जीवन से पाएँ, कितनी ही प्रेरणाएँ,
उन प्रेरणाओं से हम, निज जिंदगी सजाएँ,
नव रंग भरके सबमें, साहस नया जगाएँ।

लय : आए हो मेरी जिंदगी----

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के प्रति उद्गार

अहंम

● साध्वी प्राज्ञप्रभा ●

सौम्याकृति सहजानंदी, श्रमणी गण की हो अभिमान।
विनय समर्पण मूरत न्यारी, मनहर कनकप्रभा अभिधान।।

माँ की शीतल छाँह तले, गगन भी सिमट जाता है।
चाँद तारे फीके लगते, सूरज निस्तेज हो जाता है।
क्यों उगी वो चव्दस की भोर, जो तुमको हमसे ले गई।
निर्दयी जग की शाश्वत रीतें, कहर बन कर ढह गई।।

युगानुरूप चिंतन धारा ने, तुमको युगानुकूल बनाया।
जो आया तब चरणों में, तेरा ही गुण-गौरव गाया।
ऊर्जा के अजस्र प्रवाह का, उत्स कहँ था, प्रश्न मन में।
समाहित हुआ मन मेरा, गुरु त्रय महासागर वचन में।।

वो अनुशासन की मृदु बयार, सेवा में सजग फरमान।
विश्राम होता मानो कागज पर लेखनी को कर गतिमान।
कहाँ निहाऊँ उन दृश्यों को, बतला दो मुझको वो स्थान।
हाथ सहारे स्थित वदन है जहाँ देखूँ ओजस्वी प्रतिमान।।

आध्यात्मिक

मंगलकामना समारोह

चेन्नई।

समणी निर्देशिका विनीतप्रज्ञा जी, समणी जगतप्रज्ञा
जी ने चेन्नई में ६ दिवसीय प्रवास संपन्न कर तेरापंथ
सभा भवन, साहूकारपेट, चेन्नई से दिल्ली के लिए
प्रस्थान किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, तेममं,
अणुव्रत समिति, तेरापंथ ट्रस्ट-साहूकारपेट के सदस्यों
ने आपको भावभीनी मंगलभावना संप्रेषित की।

चेन्नई श्रावक समाज ने आपके भावी आध्यात्मिक
जीवन की मंगलकामना की।

अहंम

● साध्वी निर्णयप्रभा ●

शासनमाता पाकर, भाग्य सराएँ,
तेरी गौरव गाथा युगों-युगों तक गाएँ।

जन्म लेके चंदेरी में, हीरकणी कहलाई
पा०शि० संस्था में आ, मेधावी बन पाई
कला से कनकप्रभा, गुरु तुलसी पाएँ।।

पंचदशक प्रमुखा पद को, सजग हो निभाया
अहोभाग्य तेरापंथ का, कण-कण विकसाया
महाश्रमणी संघनिदेशिका, अलंकरण पाए
शासनमाता असाधारण, अलंकरण पाएँ।।

जीने की कला कोई, तुमसे है सीखे
क्षण-क्षण अप्रमत्त रहकर, पल-पल बीते
वात्सल्य प्रदात्री माँ को, कैसे भुलाएँ।।

अंत समय दिल्ली में साधना केंद्र आए
गुरुवर ने स्वयं चलकर, दर्शन दिराए
गुरुचरणों में अंतिम, समाधि मरण पाए
प्रथम पुण्य तिथि पर गुण हम गाएँ।।

लय : इस गया कोई रे----

♦ गृहस्थ के लिए सांसारिक और आध्यात्मिक
दोनों दृष्टिकोण हो सकते हैं, किंतु साधु को
आत्माभिमुखी रहना चाहिए। उसके लिए पदार्थ
गौण होता है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर जयंती पर विशेष भगवान महावीर जन्म कल्याणक

□ डॉ. समणी ज्योतिप्रज्ञा □

सर्वभूयस्वरवेमकरी—अहिंसा सब प्राणियों के लिए क्षेमकर है। अहिंसा परमो धर्मः अहिंसा परम धर्म है। धम्मो मंगलमुक्कित्तं—अहिंसा उत्कृष्ट मंगल है। एस धम्मे धुवे णिइए सासए—अहिंसा धर्म ध्रुव, नित्य, शाश्वत है। पाँच महाव्रतों व बारह व्रतों में अहिंसा का प्रथम स्थान है। अहिंसा है तो जीव का अस्तित्व है। ब्रह्मांड के सभी ग्रंथों व पंथों ने एक स्वर से अहिंसा की शक्ति को स्वीकार किया है। आचार्य तुलसी ने अहिंसा को माता कहा है। अहिंसा रूपी माता से ही जीव का पालन-पोषण, संरक्षण व संवर्धन होता है। अहिंसा ही एकमात्र सुख की राह है। अहिंसा ही भवसागर से पार पहुँचाने वाली नौका है। अहिंसा ही वह शरठास्थली है जहाँ जीव निर्भय होकर विचरण करते हैं। जन्मजात बैरी प्राणी भी प्रेमपूर्वक निकट बैठते हैं।

आज हिंसा का बोलबाला है। सुबह आँख खोलने से रात को आँख मूँदने तक व्यक्ति हिंसक दृश्य देखते हैं। दूरदर्शन पर व पत्र-पत्रिकाओं में हिंसा, अपहरण, शोषण, लूटपाट, चोरी-डकैती के समाचार सुर्खियों में होते हैं। दिल दहलाने वाली खबरें सुनकर भी मानव का दिल नहीं पिघलता है। आज राष्ट्र राष्ट्र से, समाज समाज से, परिवार परिवार से व्यक्ति व्यक्ति से भयभीत है। असुरक्षित अनुभव कर रहा है। इस भय का एकमात्र कारण है—हिंसा। इस हिंसक युग में अहिंसा का मूल्य और अधिक बढ़ गया है। प्राणी मात्र अहिंसा की पुकार कर रहा है। प्रश्न होता है कि वह अहिंसा क्या है? प्रश्न का समाधान AHIMSA शब्द से ही स्पष्ट होता है।

A - Avoidance of; H - Harm; I - Intended by; M - Mind; S - Speech; A - Action.

कर्म, वाणी व मन से जानबूझकर किसी को हानि पहुँचाने का परिहार करना अहिंसा है। हिंसा तीन प्रकार से होती है—मन, वाणी, कर्म से। इन तीनों योगों का दुष्प्रयोग हिंसा व सदुपयोग अहिंसा है।

मानसिक हिंसा—जो हिंसा मन, विचार व भावों से संबंधित है वह मानसिक हिंसा है। यह एक दृष्टि से परोक्ष है। आचार्य तुलसी ने कहा है—‘मन रो पाप मन ही जाणै’।

इसे कारण, जनक या मूल हिंसा भी कहा जाता है, क्योंकि यह वाचिक व कायिक हिंसा का हेतु बनती है। आचार्य महाप्रज्ञ कहते थे—युद्ध पहले मस्तिष्क में लड़ा जाता है, धरती पर तो बाद में लड़ा जाता है। आगमों में हिंसा के दो प्रकार मिलते हैं—द्रव्य और भाव। मानसिक हिंसा भाव हिंसा में परिगणित है। भाव के बिना द्रव्य हिंसा का जन्म नहीं होता। भाव हिंसा यानी निषेधात्मक विचार जहाँ-जहाँ प्रमाद व असंयम वहाँ-वहाँ हिंसा। जहाँ-जहाँ अप्रमाद व संयम वहाँ-वहाँ अहिंसा। अप्रमत्त संयती से यदि

द्रव्य हिंसा हो भी जाए तो उसे दोष नहीं लगता। प्रमत्त संयमी से यदि हिंसा न भी हो तो उसे प्रमाद का दोष लगता है। स्पष्ट है कि हिंसा का संबंध प्रमाद से है और अहिंसा का संबंध जागरूकता से।

संस्कृत सूक्त है—‘मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः’।

मनुष्यों के बंधन व मुक्ति का हेतु मन ही है। मुनि प्रसभचंद्र की घटना मानसिक हिंसा व अहिंसा का सुंदर निदर्शन है। मुनि प्रसभचंद्र जंगल में ध्यान-मुद्रा में खड़े थे। निकृष्ट भावों से वे सातवीं नरक तथा कुछ समय बाद उत्कृष्ट पवित्र विचारों से केवल ज्ञान की भूमिका तक पहुँच गए। तंदुलमत्स्य—एक छोटा-सा चावल के आकार का पंचेन्द्रिय संज्ञी जीव, जो मत्स्य की पलक पर रहता है। जीव-भक्षण के क्रूर विचारों से अद्योगति में चला जाता है। काल सौकारिक कसाई कुएँ में बैठे-बैठे मिट्टी के खिलौने स्वरूप पाँच सौ भैंसे बनाता है तथा उन्हें मारकर अपना संकल्प पूरा करता है। त्रिपुष्ट वासुदेव (भगवान महावीर) की आत्मा क्रोधावेश में शय्यापालक की हत्या करवाता है। ये सब दृष्टांत मानसिक हिंसा के परिणाम हैं। मिथ्यादृष्टिकोण, अविरति, अंतहीन इच्छाएँ, भय, घृणा, राग-द्वेष, स्पर्धा, प्रदर्शन-भावना, आसक्ति, अपमान करना आदि मानसिक हिंसा की लंबी लिस्ट है। शत्रु उतना बुरा नहीं, जितना शत्रुता का भाव, क्योंकि दूसरों के प्रति अनिष्ट चिंतन से अपना अहित पहले ही हो जाता है। मानसिक अहिंसा के अभ्यास हेतु वीर वाणी के ये सूत्र आदर्श हैं : ● मैत्तिं भूएसु कप्पए ● आय तुले पयासु ● दिट्ठं पडिसमाहरे ● सव्वे जीवा वि इच्छंति ● तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा। अहिंसा प्रशिक्षण का प्रथम सूत्र है—भावविशुद्धि।

वाचिक हिंसा—वचनों से उत्पन्न होने वाली हिंसा वाचिक हिंसा कहलाती है। श्रोता को जिन वचनों से कष्ट पहुँचता है। यह प्रत्यक्ष है। वाचिक हिंसा का मुख्य हेतु है—वाणी। वाणी जब बाण बन जाती है, तब हिंसा साकार होती है। आचार्य तुलसी ने प्रवचन माता के अंतर्गत वचन गुप्ति के संदर्भ में गाया है—‘झगड़े री जड़ है आ बोली’।

आठारह पापों में कलह, निंदा, पैशुन्य, परपरिवाद करने वाले अकारण ही अनल्प वाचिक हिंसा कर लेते हैं। कटु वचन सत्य होने पर भी वर्ज्य हैं, क्योंकि वह श्रोता के तन पर नहीं, दिल में घाव करते हैं। द्रौपदी के एक कटु वचन से पूरा कौरव वंश समाप्त हो गया। दसवें आलियं सूत्र कहता है—‘तहेव काटां काणे त्ति, पंडंगं पंडगे त्ति वा’।

मुनि काठो को काठा, नपुंसक को नपुंसक, चोर को चोर न कहे। यह कटु सत्य है। उसी प्रकार अनावश्यक, अपमानात्मक, संशयात्मक, निश्चयात्मक, मर्म-भेदक, मायामृषा, पुरुष, अपशब्द, झूठ

गवाही, धरोहर नकारना, गलत मार्गदर्शन करना वाचिक हिंसा है। बही खातों में अप्रमाणिक लेख लिखना, अल्पमूल्य को बहुमूल्य कहना, कम वस्तु को अधिक कहना वचन संबंधी दोष तो हैं ही, ध्वनि प्रदूषण भी है। गलत शब्दों के प्रयोग से होने वाला ध्वनि प्रदूषण कल-कारखानों के ध्वनि प्रदूषण से भी अधिक खतरनाक है। दुष्प्रयुक्त वचन की तरंगें संबंधित व्यक्ति के पास पहुँचकर निषेधात्मक विचार उत्पन्न करती हैं। इस प्रकार वचन से मन और मन से वचन की हिंसा चक्र अविरल घूमता रहता है।

वाचिक अहिंसा की साधना हेतु निम्न सूत्रों का विवेक अनिवार्य है : ● हिंसगं न मुसं बुया ● ना पुट्ठो वागरे किञ्चि ● मायामोसं विवज्जए ● पिट्ठमंसं न खाएज्जा ● बहुयं माय आलवे।

कायिक हिंसा—काया से होने वाली या की जाने वाली कायिक हिंसा है। यह हिंसा स्थूल है, दृष्टिगोचर है। इतिहास के झरोखे में देखें तो अर्जुनमाली, सुभूम चक्रवर्ती, दृढ़प्रहारी, रोहिणेय चोर, केसरी चोर, राजाप्रदेशी के नाम क्रू हिंसकों में प्रमुख हैं। आत्महत्या, भ्रूणहत्या मानवता के कलंक हैं।

आज जीवन का एक भी क्षेत्र हिंसा से अछूता नहीं रहा है। जैन श्रावक के लिए परिहार्य पंद्रह कर्मादान—मकान निर्माण, वन काटना, कोयले बनाना, कोल्हू लगाना, चक्की स्थापित करना, लाख बनाना, विष निर्माण इत्यादि व्यापारिक क्षेत्र में होने वाली कायिक हिंसा है। अणु बम निर्माण, अस्त्र-शस्त्रों के भंडार भरना, सेना को युद्ध प्रशिक्षण देना सुरक्षात्मक क्षेत्र में होने वाली हिंसा है। बीज बोने, सिंचाई करने, फसल काटने में होने वाली कृषि संबंधी हिंसा है। दवाओं के निर्माण व प्रयोग में अनेक स्थावर त्रस प्राणियों की हिंसा चिकित्सा संबंधी हिंसा है। यातायात साधन कार, ट्रेन, प्लेन के बनाने, विक्रय करने, चलाने आदि से संबंधित हिंसा संचार के क्षेत्र में हिंसा है। सौंदर्य प्रसाधन सामग्री में निर्दोष प्राणियों की मूक बलि वीसवीं सदी की देन है। लूटना, पीटना, मारना, डाका डालना, अपहरण, शोषण, बाँधना, जेल में रखना आदि कायिक हिंसा के अनेक रूप हैं। प्रकृतिगत असंतुलन से भूकंप, ज्वालामुखी, बाढ़, सुनामी के कारण महान अनर्थ हो जाता है। जन धन की अपूरणीय क्षति हो जाती है।

कायिक अहिंसा के प्रशिक्षण का सफलतम सूत्र है—कायोत्सर्ग, कायगुप्ति—हृत्यसंजए पायसंजए।

भगवान महावीर ने गौतम को समाधान की भाषा में कहा—कायगुप्ति से संवर होता है। संवर मोक्ष का हेतु है। अहिंसा है।

अस्तु! मानव मात्र के लिए कल्याणकारी अहिंसा जन-जन के आचरण में आए, तभी धरती पर सुख व शांति अवतरित हो सकती है।

भगवान महावीर जयंती पर महावीर को करें वंदन

● शासनश्री मुनि विजय कुमार ●

महावीर को करें वंदन, मन में बसे हरपल, है नाम यह महापावन, मिलता सदा संबल, हाँ बोलो सारे बोलो-बोलो जय बोलो, हाँ बोलो सारे बोलो तोड़ो बंधन, खोलो रे दिल खोलो-खोलो जय बोलो, हाँ बोलो सारे बोलो तोड़ो बंधन।। स्थायी पद।।

त्रिशला की गोद में आए, घर-घर में खुशियाँ छाई, सूरज बन चमके धरा पर, हर्षित हुआ जन-जन, महावीर का भजन कर लो, आत्मा बने उज्ज्वल, है नाम यह---।।१।।

सुमिरन महासुखकारी, पापों का ताप मिटाता, बाधाएँ हैं हट जाती, खिलता ज्यों है उपवन, पग-पग मनुज सफलता को, पाता यहाँ हर पल, है नाम यह---।।२।।

पावापुरी में प्रभु आए, चौमासा अंतिम बिताया, सबको उपदेश सुनाया, महक उठा कण-कण, कल्याणकारी वचनों का, निर्झर बहा कलकल, है नाम यह---।।३।।

लाखों को प्रभु ने तारा, भवदधि पार उतारा, पतितों का जन्म सुधारा, धन्य हुआ जीवन, लेता शरण 'विजय' प्रभु की, होता सदा मंगल, है नाम यह---।।४।।

लय : दहलीज पै मेरे दिल की---

एँ

● साध्वी मुक्ताप्रभा ●

स्याद्वाद के महान प्रवक्ता त्रिशला के नंदन उजियारे, अनेकांत के महान विज्ञाता सिद्धार्थ कुल राज दुलारे।

स्वर्ण प्रभात की शुभ वेला मंगल वाद्य वीणा बजाए, कुंडलपुर बनी तीर्थभूमि श्रद्धा स्वस्तिक दीप जलाए, अक्षत, कुंकम केसर लाए चराचर जग आरती उतारे।

तमस्कायकी तोड़ जंजीरें सत्यशोध का पथ दिखलाया, ज्ञात-पुत्र की जन्म जयंती मैत्री का शंखनाद सुनाया, आत्मरमण किया प्रभु ने हर पल उपसर्गों से नहीं हारे।

शांत-प्रशांत कषाय विजेता अत्राणों के त्राण बने, अंतर्तप की साधना से सम्यग् शुभ योगों में लीन बने, देशना में अमृत सृष्टि स्तुति कीर्ति वांछित सारे।

शौर्य, परम पराक्रम वे अद्भुत पारदर्शी मंजिल पाई, चौतीस अतिशय धारक अंतुर्मुखी धर्मचक्र अरुणाई, पैतीस वचलातिशय से तेजोमय दीपित महावीर हमारे।

अंतर प्रज्ञा के शंख बजाए चिन्मय चेतन बन जाऊँ, परमार्थ पथ मोक्ष निराला अरुपी अजरामर पद पाऊँ, चित्त समाधि की साधना हो भवसागर से देवतारे।

नवाहिनक अनुष्ठान से सुख-शांति नोखा।

नवरात्रि पर नौ दिन नवाहिनक जप अनुष्ठान हर पृष्टि आध्यात्मिक-पारिवारिक सुख-शांति और ग्रह शक्ति जागरण का उत्तम समय है। एक स्थान-एक समय-लयबद्ध किया जाप सिद्धिकारक व फलदाई होता है। यह उद्गार शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने नोखा तेरापंथ भवन में नवाहिनक जाप प्रारंभ पर कहे। अनुष्ठान की उपयोगिता बताई।

साध्वी पुलकितयशा जी, साध्वी कुसुमप्रभा जी ने भौतिकता की चक्राचौध, भाग-दौड़ में कुछ समय धर्म-ध्यान करने की प्रेरणा दी। नवरात्रि जाप का प्रयोग व गीतिका का संगान किया। कार्यकर्ता इंद्रचंद्र बैद ने प्रातः-सायं जप-अनुष्ठान के बारे में विस्तृत जानकारी दी।



कुरुक्षेत्र में गीता का उपदेश प्राप्त करते हुए अर्जुन ने श्रीकृष्ण से निवेदन किया—

**मन्यसे यदि तच्छक्यं,
मया द्रष्टुमिति प्रभो!
योगेश्वर! ततो मे,
त्वं दर्शयात्मानमव्ययम्।।**

अर्थात् हे प्रभो योगीश्वर! आपका वह रूप यदि देखा जाना राक्य हो, संभव हो, यदि मेरी ऐसी पात्रता हो तो आप अपना वह अविनाशी रूप दिखाने की कृपा करें। अर्जुन के निवेदन पर श्रीकृष्ण ने अपना परम ऐश्वर्य युक्त दिव्य स्वरूप दिखाया।

उस दिव्य और विराट रूप को देखने वाले मात्र दो व्यक्ति थे—धृतराष्ट्र के सारथी संजय और कृष्ण भक्त अर्जुन। श्रीकृष्ण के ईश्वरीय रूप को संजय और अर्जुन दोनों ने देखा किंतु दोनों के देखने में अंतर था। संजय केवल देख रहे थे और अर्जुन देखने के साथ उस परम सत्य व तत्त्व को हृदय की गहराई से अनुभव कर रहे थे।

मैं तेरापंथ धर्मसंघ की अष्टम् साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा को अर्जुन के रूप में देख रही हूँ जिन्होंने गुरुदेव तुलसी की कृपा का वह विराट रूप देखा। गुरुदेव तुलसी की कृपा तो शायद कईयों को मिली होगी, किंतु कृपा का वह विराट रूप शायद एकमात्र उनको ही मिला क्योंकि वह पात्रता एकमात्र उनमें ही अनुभव की गई। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी स्वयं फरमाते थे—

**सदा मे मंगलमयी माधी,
कृष्णा त्रयोदशी।
यस्यां सुदुर्लभा लब्धा,
सर्वर्द्धिं श्रेयसी कला।।**

अर्थात् माध कृष्णा त्रयोदशी मेरे लिए सदा मंगलमय है। क्योंकि उस दिन मुझे अति दुर्लभ सब ऋद्धियों से संपन्न और श्रेयस्करी कला की उपलब्धि हुई। कृपा के उस विराट रूप को प्राप्त करने की पृष्ठभूमि में बोल रही है साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा की भक्ति। 'अभिधान राजेंद्र कोष' में 'सेवायां भक्तिर्विनयः' भक्ति को सेवा माना गया है। सर्वार्थसिद्धि में भाव विशुद्धियुक्तः अनुरागो भक्तिः—भावविशुद्धि को भक्ति कहा है। संस्कृत साहित्य में स्वस्वरूपानुसंधानं भक्ति-रित्याभिधीयते' भक्ति का अर्थ अपने स्वरूप का अनुसंधान करना किया है।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के व्यक्तित्व में भक्ति के ये तीनों रूप स्पष्ट परिलक्षित होते थे—सेवा, भाव विशुद्धि और स्वस्वरूपानुसंधान। पंचसूत्रम् में आचार्यश्री तुलसी ने सेवा की महत्ता को उजागर करते हुए लिखा है—

**महान्तो ज्ञानिनः सन्ति,
महान्तो ध्यानिनस्तथा।
तेभ्योऽपि सुमहान्तश्च,
सन्ति सेवापरायणाः।।**

ज्ञानी भी महान् होते हैं और ध्यानी भी महान् होते हैं। किंतु सेवा-परायण मुनि उन सबसे महान् होते हैं। असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा सेवा धर्म की महान् साधिका, आराधिका और उपासिका

शासनमाता की पुण्यतिथि पर **भक्तियोग की श्रेष्ठ साधिका - शासनमाता** □ साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा □

थीं। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को अपनी अभूतपूर्व सेवाएँ प्रदान की। सेवापरायण साध्वीप्रमुखाश्री ने साध्वी समाज, समण श्रेणी और मुमुक्षु श्रेणी को शारीरिक, मानसिक और भावात्मक चित्त समाधि प्रदान करने में जो योगदान दिया वह अपने आपमें विलक्षण है।

उनके जीवनकाल का अंतिम चतुर्मास भीलवाड़ा में हुआ और अंतिम मर्यादा महोत्सव बीदासर में हुआ। उस समय अनेक बहिर्विहारी साध्वियों के सिंघाड़े उपस्थित थे। उन सबकी पृच्छा का कार्य अस्वस्थता की स्थिति में भी स्वयं साध्वीप्रमुखाश्री ने किया। असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री के सेवा की चेतना ने अनेक चारित्रात्माओं को चित्त समाधि का वरदान दिया।

भीलवाड़ा में साध्वी चंद्रिकाश्री असाध्य बीमारी से ग्रस्त थीं तब महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री प्रायः प्रतिदिन उनके पास पधारतीं। उन्हें मंगलपाठ, जप, स्वाध्याय सुनातीं तो कभी उन्हें श्लोक, दोहा कंठस्थ करातीं और उनके मन की बात सुनतीं। कभी-कभी तो दिन में अनेक बार उनको संभालने पधार जातीं। उन्होंने अपने संपूर्ण संयम काल में अनेकानेक रुग्ण, ग्लान, अक्षम और रौक्ष साध्वियों की साधना में सहयोग दिया। आचार्यश्री तुलसी उनके संदर्भ में फरमाया करते थे—साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने साध्वियों की तरफ से मुझे निश्चित बना दिया।

वे श्रावक समाज की आध्यात्मिक यात्रा में भी खूब सहयोगी रही। शोक संतप्त परिवारों को सेवा कराना हो या प्रतिदिन आने वाले दर्शनार्थियों को सेवा कराना हो, तत्त्वज्ञान समझाना हो, अधिवेशन, कॉन्फ्रेंस, प्रवचन-कार्यक्रम में विचाराभिव्यक्ति करनी हो अथवा घरों में गोचरी करने जाना हो। इन सब कार्यों के पीछे उनका लक्ष्य श्रावक समाज की सार-संभाल और उनकी आत्मिक उन्नति ही होता था। नारी उत्थान में भी महिला समाज को उनकी अमूल्य सेवाएँ प्राप्त हुईं। उन्होंने अपने मौलिक चिंतन और साहित्य से मानव जगत की विलक्षण सेवा की। इस प्रकार उन्होंने अपने समय, श्रम और शक्ति का नियोजन निरवद्य सेवा में कर संघ के प्रति अनन्य भक्ति का परिचय दिया।

भक्ति का दूसरा रूप है—भाव विशुद्धि। उपदेशामृत में लिखा है—
**उत्साहान्निरचयाद् धैर्यात्,
तत्तत् कर्म प्रवर्तनात्।
संगत्यागात्सतोवृत्तेः षड्भिर्मक्तिः
प्रसिद्धयति।।**

भक्ति भी तभी सफल-सिद्ध होती है, जब भक्त में ये छह गुण विकसित होते हैं। उत्साह, निश्चय, धैर्य, कर्तव्यनिष्ठा,

आसक्ति-त्याग और सज्जनोचित व्यवहार। संघ महानिदेशिका साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा का जीवन गुणों का समवाय था। वे धृति संपन्न साध्वीप्रमुखा थीं। व्यस्त से व्यस्त क्षणों में और कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वे कभी विचलित, व्यग्र या विशुब्ध नहीं हुईं। उन्होंने पाँच सौ से अधिक साध्वियों का नेतृत्व किया। उनका मार्गदर्शन और अनुशासन करते समय कभी उपालंभ भी देना पड़ता पर उनके चित्त और व्यवहार में प्रायः आवेश या उद्विग्नता नहीं दिखती थी। वे शांत व संतुलित रहतीं। वे समता, क्षमता और मतता की मूरत थीं।

आचार्यश्री तुलसी ने व्यवहार-बोध में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा के लिए लिखा है—

**साम्ययोग में सम्मुख,
रखें महाश्रमणी को।
श्रम, सेवा, स्वाध्याय,
प्रेरणा मिले सभी को।।**

आचार्य श्री तुलसी के शब्दों में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा का अंकन यथार्थता का अंकन है। विशिष्ट सम्मानपूर्ण पदों पर प्रतिष्ठित होते हुए भी ये अपने आपको सदा छोटी मानती हैं। किसी प्रकार का अहंकार इन्हें छू भी नहीं पाया है। संघ के छोटे साधु से भी हाथ जोड़कर बात करती हैं, मैं देखता रह जाता हूँ। साधुओ! विनम्रता सीखनी हो तो इनसे सीखें। भावविशुद्धि का ही परिणाम है कि उनके जीवन में निस्पृहता, विनम्रता तथा समत्व योग का विकास निरंतर होता रहा।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा की योग्यता का अंकन करते हुए कहा था—“इनकी विनम्रता को प्रथम श्रेणी में रखा जा सकता है। साध्वीप्रमुखा ने योग्यता की कसौटी में शत-प्रतिशत नहीं, सवा सौ नंबर प्राप्त किए हैं। हर दृष्टि से खरी उतरी हैं। सहिष्णुता में ये नंबर वन है। वैराग्य व साधुत्व के प्रति इनकी निष्ठा बेजोड़ है।”

आचार्य महाश्रमणजी फरमाते हैं—“ऐसी प्रबुद्ध साध्वीप्रमुखा का मिलना संघ का भाग्य है। साध्वी समाज का विशेष सौभाग्य है। आपमें विनय, समर्पण और निष्ठा का भाव अद्भुत है। मैंने देखा आपकी जो निष्ठा गुरुदेव श्री तुलसी के प्रति थी, वही श्रद्धेय आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति रही और आज भी वह निष्ठा बढ़ी है।” आचार्यों का इतना अनुग्रह उन्हें इसलिए प्राप्त हुआ क्योंकि वे सदा पवित्रता, विशुद्धता की साधना में संलग्न रही।

भावविशुद्धि रूप भक्ति के कारण ही साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने गुरुत्रय के हृदय में तो उच्च स्थान प्राप्त किया ही संघ के हर सदस्य के लिए आश्वास व विश्वास बन

गई। अपनी पवित्रता से वे जन-जन के लिए श्रद्धास्पद बन गईं।

असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा के भक्ति-भावित व्यक्तित्व का तीसरा रूप है—स्वस्वरूप का अनुसंधान—भीतर छिपे परमात्मा स्वरूप की खोज—शुद्ध स्वरूप की प्राप्ति। भक्ति के उत्तम स्वरूप को पाने के लिए उनके पास शक्तिशाली साधन था—गुरु दृष्टि : गुरु इंगित आराधन।

दसवैकालिक का सूक्त है—‘गुरुप्परायाभिमुहोरमेज्जा’ सदैव गुरु प्रसाद के अभिमुख रहें। जब गुरु प्रसन्न और संतुष्ट होते हैं तब शिष्य पर उनका दिव्य आशीर्वाद बरसता है और वह दिव्य आशीर्वाद ही शिष्य की अंतः शक्तियों को प्रस्फुटित करता है।

असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा ने समर्पण, श्रद्धा, सेवा, संघनिष्ठा आदि असाधारण विशेषताओं के कारण गुरु को सदा प्रसन्न रखा तथा सदैव उनका अलौकिक आशीर्वाद प्राप्त किया।

आचार्य की अलौकिक कृपा का ही एक साक्षात् रूप है—युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा दिया जाने वाला ‘शासनमाता’ अलंकरण।

शासनमाता जैसे विशिष्ट अलंकरण ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा के गौरव और उनकी महिमा को शिखरों चढ़ाया। इस अवसर पर गुरु भक्ति में तल्लीन शासनमाता का कहना यही था—“मैं ऐसा मानती हूँ कि आज जो जय-जयकार या अभिनंदन हो रहा, वह परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी का हो रहा है, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का हो रहा है और आचार्यश्री महाश्रमण जी का हो रहा है। मैं जो कुछ करती हूँ, वह मैं नहीं करती, आचार्य स्वयं करते हैं या मुझसे कराते हैं। मैंने पचास

वर्षों की यह यात्रा गुरुओं के बलबूते पर की है। उन्हीं के सहारे की है।”

उनके साँस-साँस में गुरु भक्ति बोलती थी। आचार्य उमास्वाति ने तत्त्वार्थ सूत्र में लिखा है—“भक्ति से संचित कर्म क्षीण होते हैं।” भक्ति से चित्त में राग-द्वेष की वृत्तियाँ क्षीण होने लगती हैं। मन इतना पवित्र और पारदर्शी बन जाता है कि भक्त को फिर भगवान को पुकारना नहीं पड़ता, खोजना नहीं पड़ता। यह सुना था कि गुरु शिष्य में जब तादात्म्य स्थापित हो जाता है तो शिष्य ही समर्पित नहीं होता गुरु भी शिष्य के प्रति समर्पित हो जाते हैं। इस सत्य का साक्षात् तब देखा जब असाध्य बीमारी से ग्रसित हो जाने के बाद अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त करते हुए शासनमाता ने कहा—‘गुरु दर्शन करने हैं।’ और उनकी इस इच्छा को पूर्ण करने के लिए आचार्य महाश्रमणजी ने लगातार एक सप्ताह तक दिन में दो-तीन विहार करते हुए ६ मार्च को ४५:५ किलोमीटर का प्रलंब विहार कर बालाजी एक्शन हॉस्पिटल में उन्हें दर्शन दिए। उस समय शासनमाता के कृतज्ञता भरे स्वर निकले—प्रभो! आपका यह महाश्रम मेरे लिए कल्याणकारी बने, मेरी आत्मा का उद्धार करने में परम उपकारी बने। भक्ति से परिपूर्ण इस मंगलकामना की परिपूर्ति भी तब प्रतीत हुई जब आचार्यप्रवर ने त्याग-प्रत्याख्यान के साथ-साथ आलोचना के द्वारा समाधि और शुद्धि का पाथेय प्रदान किया। दोष-विशुद्धि करवाकर शासनमाता की आत्मोन्नति, आत्मपवित्रता में अनन्य सहयोग प्रदान किया। गुरु के प्रति अप्रकंप भक्ति ने शासनमाता को अंतिम साँस तक स्वस्वरूपानुसंधान की दिशा में अग्रसर रखा।

शासनमाता का जीवन भक्ति रस से ओतप्रोत था। उनका सेवा, भावविशुद्धि और स्वस्वरूपानुसंधान भक्ति रूप संघ एवं गुरु के प्रति अद्भुत भक्ति के रूप में प्रकट हुआ। उनका भक्ति भावित जीवन संपूर्ण संघ के लिए गौरव का विषय है। उनकी यह भक्ति संघ के लिए सदैव आदर्श एवं प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

शासनमाता की वार्षिक पुण्यतिथि पर गुणानुवाद कार्यक्रम

तिरुकलीकुड्डम।

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में असाधारण, शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि पर गुणानुवाद कार्यक्रम जैन भवन में समायोजित किया गया। स्थानीय महिला मंडल ने साध्वी सिद्धांतश्री जी, साध्वी दर्शितप्रभा जी के साथ मिलकर गीत का संगान कर भावांजली दी।

अणुविभा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष माला कातरेला तथा अणुव्रत समिति, चेन्नई अध्यक्ष ललित आंचलिया ने होली के अवसर पर पानी अपव्यय और रंगों का उपयोग न करने का आह्वान किया। व्याख्यान में उपस्थित भाई-बहनों को साध्वीश्री जी ने त्याग भी करवाया। तेरापंथ सभा के निवर्तमान अध्यक्ष बाबूलाल खाटेड़ ने भी अपनी भावना व्यक्त की।

साध्वी लावण्यश्री जी ने शासनमाता की विनम्रता, वात्सल्यता, समर्पण, गुरुभक्ति आदि पर दृष्टांत देते हुए साध्वीप्रमुखाश्री की पुण्यतिथि पर भावांजलि अर्पित की। स्थानीय लोगों ने उपवास, एकासन, तिविहार पचखाण, सामायिक पचरंगी मौन की पचरंगी आदि के द्वारा अपनी श्रद्धा समर्पित की। रात्रिकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत शासनमाता पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम भी रखा गया। सभी अभिभावकों ने भाग लिया।

धर्माचरण से जीवन का कल्याण निश्चित : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग, अहमदाबाद,
१६ मार्च, २०२३

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः अपनी धवल सेना के साथ अहमदाबाद के शाहीबाग स्थित तेरापंथ भवन पधारे। शाहीबाग क्षेत्र अहमदाबाद के जैनों की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध है। दिगंबर हों या श्वेतांबर सभी संप्रदायों के लोग यहाँ रहते हैं। पूज्यप्रवर का यहाँ ११ दिवसीय प्रवास है।

जैनम जयतु शासनम् समवसरण में युगप्रधान आचार्यश्री ने फरमाया कि 'धम्मो मंगल मुक्किट्टम्'। यह दसवें आलियं आगम का प्रथम श्लोक है। यह एक खजाना है। इस एक श्लोक में धर्म का सार भरा हुआ है। आदमी के जीवन में मंगल हो ऐसी कामना रहती है। आदमी स्वयं का भी मंगल चाहता है और दूसरों की भी मंगलकामना करता है।

कुछ पदार्थों को भी मंगल के रूप में स्वीकार किया गया है। समय भी मंगल हो सकता है। द्रव्य मंगल हो सकते हैं, पर उत्कृष्ट भाव मंगल शास्त्रकार ने धर्म को बताया है। धर्म से बड़ा कोई मंगल नहीं है। धर्म अपने आपमें सच्चा धन है, जो आगे भी साथ जा सकता है।

दुनिया में अनेक धर्म-संप्रदाय हैं। पर शास्त्रकार ने बताया है कि अहिंसा, संयम और तप उत्कृष्ट धर्म है, जिसे हर कोई



धर्म मानता है। धर्म हमारे जीवन में आना चाहिए। मात्र ग्रंथों में धर्म की बातें हैं, उतने से हमारा काम नहीं बनता। ग्रंथों की बात हमारे जीवन में उतरे तो हमारे कल्याण की बात हो सकती है। धर्म स्थान तो सहायक है, धर्म उपादान है, वो जीवन में आए।

धर्म हमारे भाव, विचार और व्यवहार में आए। जैसा हमारा भाव होता है, वैसा हमारा विचार और व्यवहार होता है।

शास्त्रकार ने कहा है कि जिसका मन सदा धर्म में रमा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। साधु देवों के लिए भी वंदनीय होते हैं। अभी जीव को कभी मुक्ति नहीं मिल सकती। साधु और श्रावक तो रत्नों की माला और तीर्थ है। श्रावक के जितने व्रत हैं, उतना धर्म है।

हम अभी अणुव्रत यात्रा कर रहे हैं। आज अहमदाबाद के शाहीबाग क्षेत्र में आना हुआ है। गुरुदेव तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ

जी भी यहाँ पधारे थे। अहमदाबाद धार्मिक संस्कृति से जुड़ा बड़ा नगर है। जगह-जगह धर्म का माहौल देखने को मिलता है। अनेक रूपों में यहाँ साधु-साधवियों का आना होता है। यह स्वास्थ्य लाभ का भी अच्छा केंद्र बना हुआ है एवं यह उपयोगी क्षेत्र है। वर्तमान में लगभग १६२ चारित्रात्माओं का प्रवास हो रहा है। समणीया अलग है। यहाँ अच्छा क्रम चलता रहे। धर्म की चेतना बनी रहे। ज्ञान के साथ आचरण रहे। आज

साध्वी रामकुमारी जी 'सरदारशहर' से मिलना हुआ है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि सांस्कृतिक, औद्योगिक, शैक्षणिक धरा अहमदाबाद में आचार्यप्रवर का पधारना हुआ है। अहमदाबाद को धर्म नगरी के रूप में जाना जाता है। अनेक धर्मों के लोग यहाँ रहते हैं। आज अहमदाबाद में एक महासूर्य का आगमन हुआ है। अनुकूलता-प्रतिकूलता में सम रहने वाले आप महासूर्य हैं। हमेशा प्रकाश-आलोक बाँटते रहते हैं। जनता को जागरण का संदेश देने के लिए आप अहमदाबाद पधारे हैं। आदमी को ज्ञान के प्रकाश की अपेक्षा रहती है। आप ज्ञान के अथाह सागर हैं। अज्ञान को हरने वाले हैं।

साध्वी रामकुमारी जी की सहवर्तिनी साधवियों ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्वागत गीत की प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर के स्वागत में प्रवास व्यवस्था समिति से अरुण बैद, तेरापंथ सेवा समाज से सज्जन सिंघवी, तेरापंथी सभा से विकास पितलिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ समाज एवं तेरापंथ महिला मंडल द्वारा गीत से भावों की प्रस्तुति दी गई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन के लिए लाभकारी है साधु की पर्युपासना : आचार्यश्री महाश्रमण



सरदार पटेल सेवा समाज,
नवरंगपुरा, अहमदाबाद,
१५ मार्च, २०२३

चैत्र कृष्णा अष्टमी वर्तमान अवसरिणी काल के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ का दीक्षा दिवस। नए सिरे से वर्षीतप की साधना करने वाले आज से वर्षीतप की साधना शुरू करते हैं। लगभग साधिक तेरह मास का प्रथम वर्षीतप होता है। भगवान ऋषभ ने तो तपस्या की नहीं, हो गई थी। लगभग तेरह माह दस दिन तक प्रभु को आहार ही

नहीं मिला था।

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः अहमदाबाद पश्चिम क्षेत्र के मीठारवली-नवरंगपुरा क्षेत्र में स्थित सरदार पटेल सेवा समाज में पधारे। पावन मंगल पाथेय प्रदान करते हुए परम पुरुष ने फरमाया कि साधुओं की पर्युपासना करने से क्या लाभ होता है? हमारी दुनिया में गृहस्थ समाज है, तो साधु समाज भी है।

पूरी सृष्टि में साधु की उपस्थिति करोड़ों में विद्यमान रहती है। तीर्थंकर भी

रहते हैं। सृष्टि और मनुष्य जाति का सौभाग्य है कि मनुष्यों में साधु हमेशा रहते हैं। साधु से ही धर्म श्रवण मिल सकता है। साधनासिक्त जितनी आत्माएँ हैं, ऐसी आत्माओं द्वारा जो निश्रवण होता है, ऐसी वाणी का सुनना अपने आपमें अच्छा होता है।

श्रवण करने से ज्ञान होता है। ज्ञान से विज्ञान हेय-उपादेय का विवेक प्राप्त होता है। विज्ञान से फिर पाप प्रवृत्ति का प्रत्याख्यान होता है। प्रत्याख्यान से संयम हो जाएगा। संयम होने से आश्रव रुकेंगे। अनाश्रव से तपस्या होगी, तप होने पर व्यवधान-निर्जरा होगी। निर्जरा से आगे योग निरोध की स्थिति होगी, मोक्ष प्राप्ति हो सकेगी। इस तरह साधु की पर्युपासना करने से दस लाभ बताए गए हैं। कल्याण की दिशा में गति कराने वाला बन सकता है।

प्रवचन सुनने से खुद की समस्या का समाधान प्राप्त हो सकता है। आज चैत्र कृष्णा अष्टमी भगवान ऋषभ का दीक्षा कल्याणक दिवस है। आज से नया वर्षीतप शुरू होता है। पूज्यप्रवर ने नए वर्षीतप करने वालों को प्रत्याख्यान करवाए।

आज से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में 'जैन धर्मोस्तु मंगलम्' आयोजित हो रहा है। वीतराग धर्म तो मंगल ही है, वो हमारे भीतर में विकसित हो तो हमारा मंगल हो सकेगा। महिला मंडल के द्वारा कई रूपों में ज्ञान के विकास का उपक्रम चलाया जा रहा है, ये एक श्रुत के विकास में अच्छा उपक्रम है। महिला मंडल द्वारा जैन विद्वान बनाने का सपना साकार हो रहा है। बड़ा ही सुंदर प्रयास है कि ज्ञानी-विद्वतों का निर्माण करने का प्रयास किया जा रहा है।

इस क्रम में तत्त्व ज्ञान की बात आती है। ज्ञान आचरण में आए। ज्ञान का सार आचार है। ज्ञान यज्ञ; यह स्वाध्याय के रूप में है। इसमें आहुतियाँ दी जाती हैं। परिश्रम किया जाता है। महिला मंडल इसे अच्छे रूप से चलाता रहे। जहाँ विकास करना हो; किया जा सकता है। ज्ञान का उपयोग हो तो ज्ञान विकसित हो सकता है। तेरापंथ महिला मंडल इसी तरह समाज की सेवा के साथ स्वयं के कल्याण की दिशा में आगे बढ़ता रहे।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा

कि जिस व्यक्ति के पास कला होती है, उसे कोई छीन नहीं सकता। सबसे महत्वपूर्ण कला है—जीवन जीने की कला। जैन जीवनशैली की कला आ जाती है, तो सब कलाएँ आ जाती हैं। जो जीवन जीने की कला नहीं जानता, वह पंडित होकर भी अपंडित है। जैन जीवनशैली हमारे जीवन में आ जाए तो हम सम्यक् जीवन जी सकते हैं। जैन जीवनशैली के नौ सूत्रों को विस्तार से समझाया।

अभातेमम की राष्ट्रीय अध्यक्षा ने पूज्यप्रवर की सन्निधि में जैन धर्मोस्तु मंगलम् कार्यशाला की घोषणा की। तत्त्व प्रचेता, तेरापंथ दर्शन प्रचेता जैन स्कॉलर के बारे में विस्तार से बताया। महिला मंडल ने संस्कृत भाषा में गीत की प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर के स्वागत में सुरेश दक, राजीव छाजेड़, पारसमल कोठारी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। प्रसिद्ध संत रामभद्राचार्य जी के शिष्य पंडित धीरेंद्र वशिष्ठ ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए और अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



चित्त की प्रसन्नता सबसे बड़ी उपलब्धि : आचार्यश्री महाश्रमण



शाहीबाग-अहमदाबाद,
२० मार्च, २०२३

मर्यादा पुरुषोत्तम आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में चित्त की समाधि-चित्त की प्रसन्नता एक अच्छी उपलब्धि होती है। चित्त प्रसन्न है, तो फिर श्रम भी करना पड़े, चिंतन भी करना पड़े, यह शायद ज्यादा कठिन नहीं होता। चित्त अप्रसन्न है, मन आकुल-व्याकुल है, इस स्थिति में श्रम करना भी कठिन हो जाता है। चित्त प्रसन्नता रहना अच्छी भाग्य की बात है।

शास्त्र में कहा गया है कि चित्त को विप्रसन्न-विशेष प्रसन्न करें। चित्त को विप्रसन्न करने के लिए अपाय-दोषों को दूर करने का उपाय करें। समस्या होती है तो समाधान भी दुनिया में मिलता है। मृत्यु को आने के लिए भी रास्ता चाहिए। उसके आने के अनेक मार्ग हैं। मृत्यु के लिए कोई भी समय अनवसर नहीं। मौत कभी भी आ सकती है।

लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, मान हो या अपमान, निंदा हो या प्रशंसा हर स्थिति में समता रखना उपाय है चित्त को विशेष प्रसन्न रखने का। समता को धर्म कहा है। मुनि समता में रहे। गृहस्थ के जीवन में भी समता का विकास होना चाहिए। अनुकूलता-प्रतिकूलता में सम रहें। पूज्यप्रवर ने अपने दीक्षा से पूर्व के प्रसंग को समझाया। साधु जीवन आनंद का है। गृहस्थ जीवन धोराश्रम है। गृहस्थों के जीवन में तो चिंताएँ ही हैं।

साधु के लिए तो परिषद सहना भी तपस्या होती है। अनुशासन में रहना भी हितकर होता है। गुरु के परिताड़न को सहना ऊँची बात होती है। आदमी उन्नति को प्राप्त करता है। हर स्थिति में समता भाव रहे, साथ में मैत्री भाव भी रहे तो विशेष प्रसन्नता की स्थिति प्राप्त हो सकती है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि परिवर्तन शाश्वत है। सृष्टि में जीव-पदार्थ में निरंतर परिवर्तन चालू है। परिवर्तन दो प्रकार का होता है—सहज और प्रयास के द्वारा। अध्यात्मवादियों का मानना है कि मनुष्य के स्वभाव में परिवर्तन किया जा सकता है। नीति शास्त्रों का मानना है कि मनुष्य के स्वभाव में परिवर्तन नहीं भी किया जा सकता है। बदलने के दो रूप हैं—कमियों को छिपाना व कमियों को मिटाना। हमें हमारी बुरी वृत्तियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

चतुर्दशी-हाजरी का वाचन

पूज्यप्रवर ने हाजरी-मर्यादाओं को वाचन करते हुए प्रेरणाएँ प्रदान कराई कि हमारे पाँच महाव्रत पाँच अमूल्य हीरे हैं। पाँच समिति और तीन गुप्ति से हम महाव्रतों की रक्षा करें। मोहनीय कर्म रूपी डाकू इन पाँच अमूल्य हीरों को चुरा सकता है। लेख पत्र का वाचन नवदीक्षित साध्वी राहतप्रभा व दो अन्य साध्वियों से करवाया। पूज्यप्रवर ने साध्वी राहतप्रभा जी को २१ कल्याणक बख्शीष कराए। साथ वाली साध्वियों को ३-३ कल्याणक बख्शीष करवाए। सभी उपस्थित साधु-साध्वियों ने पवित्रबद्ध खड़े

होकर लेख-पत्र का वाचन किया।

शासनश्री साध्वी रमाकुमारी जी की स्मृति सभा

पूज्यप्रवर ने शासनश्री साध्वी रमाकुमारी जी का संक्षिप्त में परिचय दिया। वे वर्तमान में साध्वी राजकुमारी जी के सिंघाड़े में हिसार उपसेवाकेंद्र में स्थिरवास में थीं। वे मूल नोहर के चोरड़िया परिवार से थीं। चार सगी बहनें व कई नातिले धर्मसंघ में दीक्षित हुए हैं। उनकी आत्मा की आध्यात्मिक प्रगति के लिए तटस्थ भावना से चार लोगस का ध्यान करवाया। उनकी आत्मा उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए मोक्ष को प्राप्त हो, ऐसी मंगलभावना अभिव्यक्त की।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने उनकी स्मृति में कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक तेजस्वी धर्मसंघ है। तेजस्विता का आधार है—आचार्य परंपरा। आचार्य भिक्षु ने इस धर्मसंघ की नींवों को गहरा किया। इसका सशक्त स्तंभ है—सेवा। साध्वी रमाकुमारी जी के जीवन प्रसंग बताते हुए कहा कि उनकी संघ और गुरु के प्रति गहरी निष्ठा थी।

मुख्यमुनि महावीर कुमार जी ने भी साध्वी रमाकुमारी जी की स्मृति करते हुए उनकी आत्मा के प्रति मंगलकामना अभिव्यक्त की।

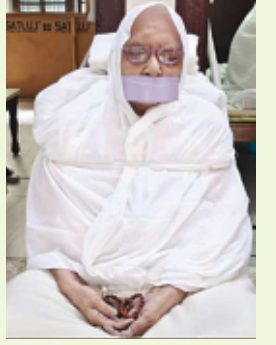
स्थानीय सभाध्यक्ष कांतिलाल चोरड़िया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शासनश्री साध्वी रमाकुमारी जी का देवलोकगमन

हिसार।

शासनश्री साध्वी रमाकुमारी जी का जन्म राजस्थान के नोहर में हुआ। जवाहरमल और हुलासी देवी चोरड़िया को उनके मामा-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। साधु-साध्वियों की सेवा-उपासना में निरत परिवार की धार्मिक चर्या का प्रभाव आपके बाल मन पर प्रतिबिंबित हुआ। फलतः दस वर्ष की उम्र में ही वैराग्य भाव के अंकुर प्रस्फुटित हो गए। आपसे पूर्व चोरड़िया परिवार से साध्वी हीरांजी (बड़ी माँ), साध्वी भीखांजी, शासनश्री साध्वी जयश्री जी एवं मौन साधिका साध्वी राजकुमारी जी दीक्षित होकर तेरापंथ धर्मसंघ की अंतरंग परिषद की सदस्य बन चुके हैं।



पूज्य गुरुदेव की मंगल सन्निधि में उपस्थित होकर अपनी भावना प्रकट की। स्वीकृति मिलते ही शिक्षण-प्रशिक्षण और परीक्षण की प्रयोग स्थली पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रविष्ट हुई। उन चार वर्षों में आपने संस्था के पाठ्यक्रम के अंतर्गत हिंदी, संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का तलस्पर्शी अध्ययन किया।

तत्पश्चात् वि०सं० २०१० गंगाशहर में परमपूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के मुख्य कमल से संयम रत्न प्राप्त किया। गुरुदेव ने उन्हें साध्वी हीरांजी (बड़ी माँ) को वंदना करवाई। तीन वर्ष तक उनके सान्निध्य में रहीं। एक वर्ष तक उन्हें गुरुकुलवास में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। फिर संसारपक्षीय चारों बहनों को साध्वी विजयश्री जी (रतनगढ़) के पास अध्ययन हेतु रखा गया। दो वर्ष बाद साध्वी भीखांजी का सिंघाड़ा बनने से चारों बहनें साथ रहने लगीं तथा वर्तमान में वे मौन साधिका, साध्वी राजकुमारी जी की निश्रा में साधनारत थीं।

प्रारंभ से ही उनकी बुद्धि कुशाग्र थी। कंठकला अच्छी थी। गीत गाती थी और बनाती थी। लिखने का तो मानो नशा-सा था। कुशल व्याख्यानदात्री थी। लोगों को समझाने में बहुत माहिर थी। मीठा बोलती थी। आगम अध्ययन एवं अन्य ग्रंथों का स्वाध्याय करती रहती थीं।

शासनश्री साध्वी जयश्री जी एवं साध्वी रमाकुमारी जी ने मिलकर एक आयुर्वेद ग्रंथ का सृजन किया, जिसका नाम है—निरामया। तेरापंथ धर्मसंघ में इस तरह का साध्वियों के द्वारा सृजित यह पहला ग्रंथ है।

उन्होंने अपने साधनाकाल में पदयात्राएँ—पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जयपुर, उदयपुर, जोधपुर आदि क्षेत्रों की हजारों किलोमीटर की यात्राएँ कीं। जैन धर्म तेरापंथ, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान का खूब प्रचार-प्रसार किया तथा अनेक लोगों को सुलभ बोधि, सम्यक्त्व की बारहव्रती, महाव्रती बनाने में अहम भूमिका निभाई।

उन्होंने कंठस्थ ज्ञान के अंतर्गत तीन आगम—दसवेंकालिक, उत्तराध्ययन, आचारांग आदि तथा भक्तांमर, कल्याणक मंदिर, शांतसुधारस, जैन सिद्धांत दीपिका, षड्दर्शन समुच्चय आदि मुखस्थ किए। अग्नि परीक्षा आदि कई व्याख्यान भी उन्हें कंठस्थ थे।

परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी, परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की वे कृपापात्र रहीं। महातपस्वी आचार्यप्रवर ने उन्हें 'शासनश्री' संबोधन से संबोधित किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की मासिक पुण्यतिथि के दिन उपसेवा केंद्र हिसार में १८ मार्च, २०२३ को प्रातः लगभग ११ बजकर ५ मिनट पर शासनश्री साध्वी रमाकुमारी जी का देवलोकगमन हो गया।